केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो :भारतीय बस्ती दैनिक वेब
www.bhartiyabasti.com
और उसका छपा संस्करण
सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क–bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com के लिये विज्ञापन बुक कराये।
विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम
सम्पर्क
मो0 9450567450
9336715406

भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :46 अंक 49 मंगलवार 10 सितम्बर 2024 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

ग्रामीणों के हत्थे चढ़े दो संदिग्ध

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। बस्ती के हर्रैया थाना क्षेत्र में दो अलग–अलग गांव में रविवार की देर रात दो संदिग्ध ग्रामीणों के हत्थे चढ़ गए। जमकर पिटाई की और फिर पुलिस को सौंप दिया।

चोर समझकर पहले ग्रामीणों ने दौड़ा लिया। जिसमें तीन व्यक्ति भागने में सफल रहे जबकि दो को पकड़ कर जमकर धुनाई की। घटना को लेकर रात भर गांव में अफरा–तफरी मची रही। वहीं ग्रामीणों की रातों की नींद उड़ गई। सूचना पर पहुंची हर्रैया पुलिस ने दोनों संदिग्ध व्यक्तियों को हिरासत में लेकर थाने पर कड़ाई से पुछताछ कर रही है। हर्रैया थाना क्षेत्र रेऊआ बाबू और मुरादीपुर गांव के बीच बाहर एक सागौन बगीचे में रात्रि करीब साढ़े ग्यारह बजे तीन संदिग्ध व्यक्ति खड़े थे। ग्रामीणों ने काफी देर तक वहां खड़े व्यक्तियों का चोर का अंदेशा लगाया। ग्रामीणों ने इन्हें पकड़ने के लिए तीन गांव के लोगों को इसकी सूचना दी। ग्रामीणों ने इन्हें चारों ओर से घेर लियाध। तो तीनों व्यक्ति भागने लगे। जिसमें दो व्यक्ति भागने में सफल रहे जबकि एक को ग्रामीणों ने दौड़ाकर धर दबोचा। इसके बाद उसकी जमकर धुनाई कर दिया। घटना की सूचना हर्रैया पुलिस को दी। सूचना पर पहुंची डायल 112 व हर्रैया थाना पुलिस ने व्यक्त को पकड़कर अपने हिरासत में लिया है। इसी थाना क्षेत्र के जुड़ईपुर गांव के पश्चिम ओर एक नहर की पुलिया पर रात्रि साढ़े नौ बजे दो अंजान व्यक्ति बैठे मिले थे वहां से गुजर रहे गांव चौकीदार राजबहादुर की इनपर नजर इनपर पड़ी तो उन्होंने कुछ ग्रामीणों को बुलाया। ग्रामीणों को वहां आता देख दोनों व्यक्ति भागने लगे। जिसमें से एक व्यक्ति को लोगों ने दौड़ाकर पकड़ लिया। जबकि दूसरा व्यक्ति नहर में कूदकर भाग लिया। चौकीदार ने व्यक्ति को हर्रैया पुलिस को सौंप दिया। पुलिस दोनों संदिग्ध व्यक्तियों पूछताछ कर रही हैं। इस संबंध में हर्रैया थाना प्रभारी निरीक्षक डीपी सिंह ने बताया कि दोनों संदिग्ध व्यक्तियों से पूछताछ किया जा रहा है।

एक ही रात में चार घरों में चोरी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। दुबौलिया थाना क्षेत्र के ध ारमूपुर गांव में एक ही रात में चार घरों में चोरों ने जमकर हाथ साफ किया। धरमूपुर गांव के कुछ ग्रामीण दुबौलिया महाराजगंज संपर्क मार्ग पर निवास करते हैं। जहां अर्जुन कारपेंटर का काम करता है। उसी के घर चोरों ने बंद कमरे में घुसकर उसमें रखा बक्सा उठा ले गए। जिसमें करीब एक लाख रुपये और एक अंगूठी और कुछ कपड़े रखे हुए थे। वहीं इसी गांव के जयप्रकाश प्रजापति बिरयानी की दुकान चलाते हैं जिसमें चोर घुस कर बैठकर खाना भी खाए हैं। जिसके बाद उसमें रखा मिक्सर और नगदी, बर्तन तथा पंखा उठा ले गए। वहीं उन्हें के घर के बगल रामकुमार सिंह के घर में भी दरवाजा तोड़कर सामान उठा ले गए। उसी से 300 मीटर दूर पारस नाथ मिश्र के यहां पंप हाउस का ताला तोड़ने का प्रयास चोरों ने किया। ताला न टूटने पर गेट के ऊपरी हिस्से को तोड़कर अंदर घुसकर मोटर पंप उठा ले गए।

ग्रामीणों के हत्थे चढ़े दो संदिग्ध

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

विक्रमजोत (बस्ती) । हर्रैया विद्युत वितरण खांड अंतर्गत एसडीओ विक्रमजोत के पद पर तैनात रामबहादुर यादव को उनके पद से हटा दिया गया है। प्रशासनिक आध ार पर किए गए स्थानांतरण के तहत उन्हें मुख्य अभियंता वितरण जोन मिर्जापुर के कार्यालय से सम्बद्ध किया गया है। एमडी पूर्वांचल विद्युत वितरण निगम वाराणसी के स्तर से की गई कार्रवाई का पत्र वहां तैनात अधीक्षण अभियंता अरविंद नायक की ओर से जारी किया गया है। विक्रमजोत में उपकेंद्र बनने के बाद से रामबहादुर यादव वहां तैनात बताए जाते हैं। –––

69 हजार शिक्षक भर्ती मामले में सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट के आदेश पर लगाई रोक, योगी सरकार से मांगा जवाब

नई दिल्ली (आभा)। सुप्रीम कोर्ट ने इलाहबाद हाईकोर्ट के उस आदेश पर रोक लगा दी है, जिसमें उच्च न्यायालय ने यूपी सरकार से 69 हजार सहायक शिक्षकों की नई लिस्ट तैयार करने को कहा था।

सर्वोच्च न्यायालय ने जून 2020 और जनवरी 2022 में जारी उत्तर प्रदेश के शिक्षकों की चयन सूचियों को रद्द करने के हाईकोर्ट के आदेश पर भी रोक लगा दी। इसमें 6,800 उम्मीदवार शामिल थे। मामले में सुप्रीम कोर्ट ने उत्तर प्रदेश सरकार और अन्य को नोटिस जारी किया है और कहा कि इसी के साथ अंतिम सुनवाई भी की जाएगी।

चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की बेंच ने रवि कुमार सक्सेना और 51 अन्य द्वारा दायर याचिका पर राज्य सरकार यूपी बेसिक

शिक्षा बोर्ड के सचिव समेत अन्य को नोटिस भी जारी किए। बेंच ने कहा कि वह याचिका पर सुनवाई 23 सितंबर से शुरू होने वाले सप्ताह में तय करेगी।

गौरतलब है कि इलाहाबाद हाईकोर्ट ने 2019 में हुई 69 हजार सहायक अध्यापक भर्ती के चयनित अभ्यर्थियों की सूची नए सिरे से जारी करने का आदेश दिया था। कोर्ट ने 1 जून 2020 और 5 जनवरी 2022 की चयन सूचियां को दरकिनार कर नियमों के तहत तीन माह में नई चयन सूची बनाने के निर्देश दिए। कोर्ट के इस फैसले से राज्य सरकार के लिए बड़ा झटका माना जा रहा था। वहीं पिछली सूची के आधार पर नौकरी कर रहे शिक्षकों की सेवा पर भी संकट खड़ा हो गया था।

कोर्ट ने कहा था कि नई चयन सूची में 1981 के नियम के तहत आरक्षण अधिनियम 1994 के मुताबिक आरक्षण नीति का पालन किया जाए। अगर आरक्षित वर्ग के अभ्यर्थी की मेरिट सामान्य श्रेणी के बराबर आए तो वह सामान्य श्रेणी में आ जाएगा। इन निर्देशों के तहत ऊपरी क्रम में आरक्षण दिया जाएगा। कोर्ट ने यह भी निर्देश दिया कि सूची तैयार करने में अगर कोई कार्यरत अभ्यर्थी प्रभावित हो तो राज्य सरकार या सक्षम प्राध िकारी उसे सत्रांत का लाभ प्रदान करेंगें। जिससे इसका खामियाजा विद्यार्थियों को न भुगतना पड़े। कोर्ट ने इन निर्देशों के अनुसार एकल पीठ के आदेश व निर्देशों को संशोधित कर दिया। इस मामले में 69 हजार प्राथमिक सहायक शिक्षकों की भर्ती में आरक्षण के विवाद के मुद्दे उठाए गए थे।

गुजरात में फुड पार्क लगाएगा यूएई: 4 समझौतों पर हस्ताक्षर

नई दिल्ली (आभा)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अबू धाबी के वली अहद (युवराज) शेख खालिद बिन मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान के साथ व्यापक वार्ता की और दोनों देशों ने समग्र रणनीतिक संबंधों को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करते हुए ऊर्जा सहयोग बढ़ाने के लिए सोमवार को चार समझौतों पर हस्ताक्षर किए। अबू धाबी नेशनल ऑयल कंपनी और इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड के बीच दीर्घकालिक एलएनजी आपूर्ति के लिए एक समझौता और एडीएनओसी और इंडिया स्ट्रेटेजिक पेट्रोलियम रिजर्व लिमिटेड के बीच एक समझौता भी उन चार समझौतों में शामिल हैं।

विदेश मंत्रालय के अनुसार, अमीरात परमाणु ऊर्जा कंपनी (ईएनईसी) और न्यूक्लियर पावर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (एनपीसीआईएल) ने भी बाराकाह

परमाणु ऊर्जा संयंत्र के संचालन और रखरखाव के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। चौथा समझौता अबू धाबी तटवर्ती ब्लॉक–वन के लिए ऊर्जा भारत और एडीएनओसी के बीच उत्पादन रियायत समझौता है। भारत में फूड पार्क स्थापित करने के लिए गुजरात सरकार और अबू धाबी डेवलपमेंट होल्डिंग कंपनी पीजेएससी के बीच एक अलग समझौता किया गया।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रंधीर जायसवाल ने कहा कि मोदी और युवराज अल नाहयान ने व्यापक रणनीतिक साझेदारी को व्यापक बनाने के उद्देश्य से भारत और यूएई के बीच बहुआयामी संबंधों पर चर्चा की। उन्होंने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''भारत–यूएई संबंधों में शानदार प्रगति हो रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज अबू धाबी के युवराज शेख खालिद बिन मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान से मुलाकात की।''

जायसवाल ने कहा, ''दोनों नेताओं ने बहुआयामी भारत–यूएई संबंधों और नए एवं उभरते क्षेत्रों में व्यापक रणनीतिक साझेदारी को व्यापक बनाने के अवसरों पर चर्चा की।'' नाहयान अपनी दो दिवसीय भारत यात्रा के तहत रविवार को नयी दिल्ली पहुंचे। मोदी से बातचीत के बाद शाह ने राजघाट जाकर राष्ट्रपिता महात्मा गांध ी को श्रद्धांजलि दी।

जायसवाल ने एक अन्य पोस्ट में कहा, ''उनकी शिक्षाएं हमें प्रेरित करती रहती हैं। हम यूएई के साथ अपनी दोस्ती को मजबूत कर रहे हैं।'' समझा जाता है कि अपनी बातचीत के दौरान मोदी और अल नाहयान ने गाजा में स्थिति सहित वैश्विक चुनौतियों पर भी विचार–विमर्श किया।

104 शिक्षकों को दिया आईसीटी के प्रयोग का प्रशिक्षण

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। स्मार्ट क्लासेस के उपकरणों के उपयोगार्थ एक दिवसीय प्रशिक्षण सोमवार को जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण सभागार में संपन्न हुआ। जिसमें आठ विकासखण्डों के 104 शिक्षकों का प्रशिक्षण संपन्न हुआ। डायट प्राचार्य संजय कुमार शुक्ल ने प्रशिक्षण का शुभारंभ किया। डायट प्राचार्य ने प्रशिक्षण को संबोधित करते हुए कहा कि आईसीटी सुगमता एवं व्यक्तिगत शिक्षा के साथ ही आधुनिक तकनीकी और आलोचनात्मक सोच जैसे महत्वपूर्ण कौशलों को बढ़ावा देता है। जिला बेसिक शिक्षा अध िकारी अनूप कुमार ने बताया कि शिक्षक आईसीटी का प्रयोग नियमित कार्य, लेसन प्लान, सूचना प्रस्तुति, इंटरनेट पर बुनियादी जानकारी की खोज आदि के लिए करते हैं। प्रवक्ता शशि दर्शन त्रिपाठी ने आईसीटी के प्रयोग के बारे में विस्तार से बताया।

इस अवसर पर स्वप्निल श्रीवास्तव, डॉ गोविंद प्रसाद, मो इमरान खान, अलीउद्दीन खान, अमन सेन, शशि दर्शन त्रिपाठी, डॉ रवि नाथ त्रिपाठी, कुलदीप चौधरी, कल्याण पाण्डेय, सरिता चौधरी, वर्षा पटेल, वन्दना चौधरी, डॉ ऋचा शुक्ला, आशीष श्रीवास्तव आदि ने कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन में अपना योगदान दिया।

श्री कृष्णा मिशन हॉस्पिटल में फ्री मेगा कार्डियोलॉजी कैम्प 12 को

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । श्री कृष्णा मिशन हॉस्पिटल में गुरूवार 12 सितम्बर को फ्री मेगा कार्डियोलॉजी कैम्प का आयोजन किया गया है।

श्री कृष्णा मिशन हॉस्पिटल के चेयरमैन बसंत चौधरी ने बताया कि टेण्डर पाम हास्पिटल लखनऊ के वरिष्ठ हृदयरोग विशेषज्ञ डा. गौतम स्वरूप, डा. मोहित मोहन सिंह 12 सितम्बर को दिन में 11 बजे से 3 बजे तक मरीजों का परीक्षण कर निःशुल्क चिकित्सकीय परामर्श देंगे। बताया कि माह के प्रत्येक मंगलवार को ओ.पी.डी. की सेवायें मरीजों को मिलेगी। बताया कि हॉस्पिटल में इलाज के लिये अत्याधुनिक संसाध ान उपलब्ध हैं। पूर्वान्चल के दूर दराज के मरीज श्री कृष्णा मिशन हॉस्पिटल में बेहतर उपचार पा रहे हैं। आयुष्मान कार्ड के साथ ही केन्द्र और उत्तर प्रदेश के स्वास्थ्य से सम्बंध ित सभी सुविधायें मरीजों को उपलब्ध ा हैं। बीमित मरीजों के इलाज की भी पूरी व्यवस्था है। कार्डियोलॉजी कैम्प से मरीज लाभ उठा सकते हैं। हृदयरोग के इलाज के लिये अब उन्हें भटकना नहीं पडेगा।

नव चयनित लेखपालों का मण्डलीय प्रशिक्षण शुरू

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । राजस्व परिषद के निर्देशानुसार मण्डलीय राजस्व प्रशिक्षण विद्यालय, बस्ती (स्थापित खैर इण्डस्ट्रियल इण्टर कॉलेज, बस्ती) में नवनियुक्त लेखपालों का प्रशिक्षण सत्र का उद्घाटन मण्डलायुक्त अखिलेश सिंह द्वारा जिलाधिकारी रवीश गुप्ता, मुख्य राजस्व अधिकारी संजीव ओझा सहित अन्य अधिकारियों एवं प्रशिक्षु लेखपालों के उपस्थिति में दीप प्रज्जवलन एवं माल्यार्पण कर शुभारम्भ किया गया। मण्डल के तीनों जनपदों में नवचयनित लेखपालों का प्रशिक्षण एक वर्ष तक चलेगा। मण्डलीय प्रशिक्षण में 434 लेखपालों को प्रशिक्षण दिया जायेगा।

आयुक्त ने अपने सम्बोधन में कहा कि वास्तव में लेखपाल ही आमजनता की समस्याओं का तत्काल निस्तारण कर सकता है। उन्होंने अनुशासन पर विशेष बल दिया। जिलाधिकारी द्वारा शासन की महत्वपूर्ण योजनाओं में लेखपाल की भूमिका पर प्रकाश डाला गया। प्रशिक्षण के सम्बन्ध में अपने सम्बोधन में मुख्य राजस्व अधिकारी, द्वारा लेखपालों के कार्यों एवं दायित्वों पर प्रकाश डाला गया।

मंच का संचालन नायब तहसीलदार इटवा–सिद्धार्थनगर राघवेन्द्र पाण्डेय द्वारा किया गया। उक्त अवसर पर उपजिलाधिकारी बस्ती सदर, शत्रुघ्न पाठक, उपजिलाधिकारी सन्तकबीरनगर अरूण कुमार, तहसीलदार बस्ती सदर/प्रधानाचार्य मण्डलीय राजस्व प्रशिक्षण विद्यालय विनय प्रभाकर, अपर सांख्यिकीय अधिकारी भूलेख बस्ती अजय कुमार चौधरी, ना० तहसीलदार बस्ती सदर वीर बहादुर सिंह, विजय गुप्ता, (राजस्व निरीक्षक) नन्द कुमार श्रीवास्तव, (राजस्व निरीक्षक) संजय श्रीवास्तव, (लेखपाल, भूलेख अनुभाग–बस्ती) अभिनव, (लेखपाल, भूलेख अनुभाग–बस्ती) ललित यादव, (लेखपाल, तहसील बस्ती सदर) मनोज उपाध्याय, (लेखपाल, तहसील बस्ती सदर) भगवान तिवारी आदि उपस्थित रहे।

शिक्षक भर्ती में दोहरा खेल न खेले भाजपा- अखिलेश

लखनऊ (आभा)। उत्तर प्रदेश की 69000 शिक्षक भर्ती मामले पर सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने योगी आदित्यनाथ सरकार को घेरा है। उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट के जरिए कहा कि उत्तर प्रदेश की बीजेपी सरकार नौकरी देनेवाली सरकार नहीं है।

उन्होंने इसी पोस्ट में आगे कहा कि 69000 शिक्षक भर्ती मामले में यूपी की सरकार दोहरा खेल न खेले। इस दोहरी सियासत से दोनों पक्ष के अभ्यर्थियों को ठगने और सामाजिक, आर्थिक व मानसिक रूप से ठेस पहुंचाने का काम बीजेपी सरकार न करे।

अखिलेश यादव ने आगे कहा कि यूपी की बीजेपी सरकार की भ्रष्ट–प्रक्रिया का परिणाम अभ्यर्थी क्यों भुगतें। जो काम 3 दिन में हो सकता था, उसके लिए 3 महीने का इंतजार करना और ढिलाई बरतना बताता है कि बीजेपी सरकार किस तरह से नई लिस्ट को जानबूझकर न्यायिक प्रक्रिया में उलझाना व सुप्रीम कोर्ट ले जाकर शिक्षक भर्ती को फिर से लंबे समय के लिए टालना चाह रही है। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ले जाकर भर्ती लटकाने की भाजपाई चालबाजी को अभ्यर्थी समझ रहे हैं। यूपी की भाजपा सरकार का ऐसा आचरण घोर निंदनीय है। भाजपा न इनकी सगी है, न उनकी।

एमपॉक्स प्रकोप को लेकर सरकार ने जारी किया दिशा निर्देश

नई दिल्ली (आभा)। केंद्र ने वैश्विक एमपॉक्स प्रकोप के मद्देनजर सोमवार को सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को एक सलाह जारी की, जिसमें भारत में वायरस के प्रसार से बचने के निर्देश दिए गए। केंद्र सरकार ने सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों से समुदाय में सभी संदिग्ध एमपीओक्स मामलों की स्क्रीनिंग और परीक्षण करने और संदिग्ध और पुष्टि किए गए रोगियों के लिए अस्पतालों में अलगाव इकाइयों की पहचान करने को कहा। आपको बता दें कि एक युवक, जो हाल ही में एमपॉक्स (मंकीपॉक्स) के प्रकोप वाले देश की यात्रा करके लौटा था, उसकी पहचान एक संदिग्ध मामले के रूप में की

गई, जो भारत में पहली बार हुआ।

केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव अपूर्व चंद्रा ने सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेश प्रशासनों को लिखे पत्र में उनसे सभी आवश्यक सावधानी बरतने और जनता के बीच किसी भी तरह की अनुचित घबराहट को रोकने के लिए कहा है। सतर्क रहने की जरूरत पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि मौजूदा प्रकोप में भारत में एमपॉक्स का कोई नया मामला सामने नहीं आया है और संदिग्ध मामलों में से किसी भी नमूने का परीक्षण सकारात्मक नहीं आया है।' स्वास्थ्य सचिव ने आगे कहा कि केंद्र उभरती स्थिति पर बारीकी से नजर रखे हुए है। उन्होंने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से विशेष रूप से स्वास्थ्य सुविधा स्तर पर सार्वजनिक स्वास्थ्य तैयारियों की समीक्षा करने, अस्पतालों में अलगाव सुविधाओं की पहचान करने और ऐसी सुविधाओं पर आवश्यक रसद और प्रशिक्षित मानव संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने को कहा है। पत्र में, चंद्रा ने सभी राज्य और केंद्रशासित प्रदेश प्रशासनों को एमपॉक्स के बारे में लोगों के बीच जागरूकता फैलाने, यह कैसे फैलता है और निवारक उपाय करने और मामलों की समय पर रिपोर्ट करने की आवश्यकता है।

रवीश उपाध्यक्ष, विवेककान्त संगठन मंत्री बने

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ की बैठक सोमवार को प्रेस क्लब सभागार में जिलाध्यक्ष चन्द्रिका सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक के प्रथम चरण में संगठन का विस्तार करते हुए सर्वसम्मति से रवीश कुमार मिश्र को जिला उपाध यक्ष तथा विवेक कान्त पाण्डेय को जिला संगठन मंत्री का दायित्व सौंपा गया। जिलाध्यक्ष चन्द्रिका सिंह ने पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाते हुए दोनों पदाधिकारियों से अपेक्षा किया कि संघ के साथ मिलकर शिक्षक हित में कार्य करेंगे और संगठन को गति प्रदान करने में अपना सहयोग देंगे। रवीश कुमार मिश्र और विवेक कान्त पाण्डेय ने कहा कि संगठन ने जो दायित्व दिया है उसका पालन करते हुए संगठन को मजबूत बनाया जाएगा। बैठक के द्वितीय चरण में आगामी जिला अधिवेशन और गैर मान्यता प्राप्त विद्यालयों पर कार्यवाही के विषय में चर्चा हुई।

जिला मंत्री बालकृष्ण ओझा ने कहा कि विभागीय और प्रशासनिक अधिकारियों को ज्ञापन देने के बावजूद

-उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ की बैठक में शिक्षक समस्याओं के निस्तारण के लिये एकजुटता पर जोर

गैर मान्यता प्राप्त विद्यालयों पर कार्रवाई नहीं हुई है इसके लिए ही जल्द धरना प्रदर्शन किया जाएगा। जिला कोषाध्यक्ष दुर्गेश यादव ने कहा कि जिला अधिवेशन की तैयारियां जोरों पर हैं पूरे जिले में सदस्यता अभियान चल रहा है सारी औपचारिकताएं पूरी होने के उपरांत जल्द ही जिला अधिवेशन की तारीख घोषित की जाएगी।

बैठक में रजनीश यादव, हरेन्द्र यादव, शिल्पी, कुसुम, गौरव चौधरी, सुधीर तिवारी, शिव प्रकाश सिंह, विजय यादव, दीपचंद, मनीष कुमार, सतराम वर्मा, संतोष कुमार पाण्डेय, मोहम्मद असलम, राम भवन यादव, सुरेश गौड़, शिवरतन, सनद पटेल, प्रताप नारायण चौधरी, मंगला मौर्य, अनिल कुमार पाण्डेय, रवि प्रताप सिंह, वेद उपाध्याय, देवेन्द्र सिंह, भारत भूषण यादव, अनीस अहमद, राजकुमार त्रिपाठी, नितिन, सुशील गहलोत, गिरजेश चौधरी, अमित पाण्डेय, दिनेश सिंह, रंजन सिंह, प्रवीन श्रीवास्तव, अशोक यादव, विवेकानंद, राजेश द्विवेदी, संतोष मिश्र, विवेक सिंह सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

शिक्षिका को मूल पद पर पद स्थापित करने की मांग: भारत मुक्ति मोचा ने सौंपा ज्ञापन

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । भारत मुक्ति मोर्चा जिलाध यक्ष आर.के. आरतियन के नेतृत्व में मोर्चा पदाधिकारियों ने जिलाधिकारी को सम्बोधित ज्ञापन प्रशासनिक अध िकारी को सौंपा। मांग किया कि विकास खण्ड बस्ती सदर के कम्पोजिट विद्यालय तकिया डारीडीहा से निलम्बित प्रभारी प्रधानाध्यापिका सुमन को पुनः पद स्थापित किया जाय।

ज्ञापन देने के बाद आर. के. आरतियन ने बताया कि बेसिक शिक्षा अधिकारी ने जातीय मानसिकता से ग्रसित होकर 2 अक्टूबर 2023 को राष्ट्रीय अवकाश के दिन प्रध ानाध्यापिका सुमन को निलम्बित कर दिया था। शिक्षिका सुमन हाईकोर्ट इलाहाबाद के शरण में गई। हाईकोर्ट ने आदेश दिया कि शिक्षिका सुमन को विकास खण्ड बस्ती सदर के कम्पोजिट विद्यालय तकिया डारीडीहा मूल विद्यालय पर पद स्थापित किया जाय। इसके बावजूद बीएसए ने अभी तक शिक्षिका को मूल विद्यालय पर पदस्थापित नहीं किया गया है।

चेतावनी दिया कि यदि एक सप्ताह के भीतर शिक्षिका को पदस्थापित न किया गया तो मोर्चा आन्दोलन को बाध्य होगी।

बहुजन मुक्ति पार्टी के मण्डल अध्यक्ष हृदय गौतम ने कहा कि उच्च न्यायालय इलाहाबाद के आदेश के बावजूद विकास खण्ड बस्ती सदर के कम्पोजिट विद्यालय तकिया डारीडीहा से निलम्बित प्रभारी प्रध ानाध्यापिका सुमन को पुनः पद स्थापित नहीं किया जा रहा है। शिक्षिका सुमन ने जिलाधिकारी को रजिस्टर्ड पत्र भेजकर आग्रह किया था कि उच्च न्यायालय इलाहाबाद के आदेश के अनुरूप उन्हें कम्पोजिट विद्यालय तकिया डारीडीहा में प्रभारी प्रधानाध्यापिका के रूप में तैनात किये जाने के साथ ही अगस्त माह के पूर्व का बकाया वेतन उपलब्ध कराया जाय। आदेश के बावजूद बीएएसए स्तर पर उन्हें अभी तक पूर्व पद पर बहाल नहीं किया गया है इससे उसका परिवार घोर आर्थिक संकट का सामना कर रहा है। शिक्षिका सुमन को मूल विद्यालय पर पदस्थापित कराया जाय।

ज्ञापन देने वालों में मुख्य रूप से ठाकुर प्रेमनन्द बंशी, चन्द्रिका प्रसाद, बुद्धि प्रिय पासवान, सुनील कुमार कन्नौजिया, रामकिशोर ठाकुर, भूपेन्द्र चौधरी आदि शामिल रहे।

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"–वेंडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 10 सितम्बर 2024 मंगलवार

सम्पादकीय

नये सन्दर्भो में कांग्रेस

जून 2024 के चुनाव परिणामों के बाद राहुल गांधी का ग्राफ काफी बढ़ गया है। बेशक इसके लिए उन्होंने लम्बा संघर्ष किया और भारत के आधुनिक इतिहास में शायद सबसे लम्बी पदयात्रा की जिस दौरान उन्हें देशवासियों का हाल जानने और उन्हें समझने का अच्छा मौका मिला। इस सबका परिणाम यह है कि वह संसद में आक्रामक तेवर अपनाए हुए हैं और तथ्यों के साथ सरकार को घेरते रहते हैं। किसी भी लोकतंत्र के स्वास्थ्य के लिए पक्ष और विपक्ष दोनों का मजबूत होना जरूरी होता है। इसी से सत्ता का संतुलन बना रहता है और सत्ताधीशों की जनता के प्रति जवाबदेही संभव होती है। अन्यथा किसी भी लोकतंत्र को अधिनायकवाद में बदलने में देर नहीं लगती।

आज राहुल गांधी विपक्ष के नेता भी हैं जो कि भारतीय संवैधानिक व्यवस्था के अंतर्गत एक अत्यंत महत्वपूर्ण पद है। जिसकी बात को सरकार हल्के में नहीं ले सकती। इंगलैंड, जहां से हमने अपने मौजूदा लोकतंत्र का काफी हिस्सा अपनाया है, वहां तो विपक्ष के नेता को 'शैडो प्राइम मिनिस्टर' के रूप में देखा जाता है। उसकी अपनी समानांतर कैबिनेट भी होती है, जो सरकार की नीतियों पर कड़ी नजर रखती है। यह एक अच्छा माडल है जिसे अपने सहयोगी दलों के योग्य नेताओं को साथ लेकर राहुल गांधी को भी अपनाना चाहिए। आपसी सहयोग और समझदारी बढ़ाने के लिए, यह एक अच्छी पहल हो सकती है। राहुल गांधी को विपक्ष का नेता बनाने में 'इंडिया गठबंधन' के सभी सहयोगी दलों, विशेषकर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव की बहुत बड़ी भूमिका रही है। उत्तर प्रदेश से 37 लोकसभा सीटें जीत कर अखिलेश यादव ने राहुल गांधी को विपक्ष का नेता बनने का आधार प्रदान किया।

समाजवादी पार्टी भारत की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी बन गई है। ऐसे में अब राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी का यह नैतिक दायित्व है कि वे भी अखिलेश यादव जैसी उदारता दिखाएं जिसके कारण कांग्रेस को रायबरेली और अमेठी जैसी प्रतिष्ठा की सीटें जीतने का मौका मिला। वर्ना उत्तर प्रदेश में कांग्रेस संगठन और जनाधार के मामले में बहुत पीछे जा चुकी थी। अब महाराष्ट्र और हरियाणा के चुनाव हैं, जहां कांग्रेस सबसे बड़े दल की भूमिका में है। वहां उसे समाजवादी पार्टी को साथ लेकर चलना चाहिए और दोनों राज्यों के चुनावों में समाजवादी पार्टी को भी कुछ सीटों पर चुनाव लड़वाना चाहिए। महाराष्ट्र में तो समाजवादी पार्टी के दो विधायक अभी भी थे। हरियाणा में भी अगर कांग्रेस के सहयोग से उसके दो–तीन विधायक बन जाते हैं तो अखिलेश यादव को अपने दल को राष्ट्रीय दल बनाने का आधार मिलेगा। इससे दोनों के रिश्ते प्रगाढ़ होंगे और 'इंडिया गठबंधन' भी मजबूत होगा।

स्वाभाविक–सी बात है कि कांग्रेस के कुछ बड़े नेताओं को इस रिश्ते से तकलीफ होगी क्योंकि कांग्रेस और समाजवादी पार्टी का उत्तर प्रदेश में वोट बैंक एक–सा है। ये नेता पुराने ढर्रे पर चलकर समाजवादी पार्टी के जनाधार पर निगाह गढ़ाएंगे। पर ऐसी हरकत से दोनों दलों के आपसी संबंध बिगड़ेंगे और बहुत दूर तक साथ चलना मुश्किल होगा। इसलिए 'इंडिया गठबंधन' के हर दल को यह ध्यान रखना होगा कि जिस राज्य में जिस दल का वर्चस्व है वह वहां नेतृत्व संभाले पर साथ ही अपने सहयोगी दलों को भी साथ खड़ा रखे। विशेषकर उन दलों को जिनका उन राज्यों में कुछ जनाधार है। इससे गठबंधन के हर सदस्य दल को लाभ होगा। राहुल गांधी को ये सुनिश्चित करना होगा कि उनके सहयोगी दल 'इंडिया गठबंधन' यह अपने को उपेक्षित महसूस न करें। 'इंडिया गठबंधन' में राहुल गांधी के बाद सबसे बड़ा कद अखिलेश यादव का है। अखिलेश की शालीनता और उदारता का उनके विरोधी दलों के नेता भी सम्मान करते हैं। ऐसे में अखिलेश यादव को पूरा महत्व देकर राहुल गांधी अपनी ही नींव मजबूत करेंगे।

हालांकि समाजवादी पार्टी और कांग्रेस गठबंधन के पिछले कुछ अनुभव अच्छे नहीं रहे। इसलिए और भी सावधानी बरतनी होगी। क्योंकि अखिलेश यादव में इतना बड़प्पन है कि वह अपनी कटु आलोचक बुआजी बहन मायावती से भी संबंध सुधारने में सद्भावना से पहल कर रहे हैं। यही नीति ममता बनर्जी, उद्धव ठाकरे, शरद पवार व लालू यादव आदि को भी अपनानी होगी। तभी ये सब दल भारतीय लोकतंत्र को मजबूत बना पाएंगे। यही बात भाजपा पर भी लागू होती है। 'सबका साथ–सबका विकास' का नारा देकर भाजपा क्षेत्रीय दलों के साथ एन.डी.ए. गठबंधन चला रही है पर भाजपा का पिछले 10 वर्षों का यह इतिहास रहा है कि उसने प्रांतों की सरकार बनाने में जिन छोटे दलों का सहयोग लिया, कुछ समय बाद उन्हीं दलों को तोडने का काम भी किया। हमारे लोकतंत्र का यह दुर्भाग्य है कि जीते हुए सांसद और विधायकों की प्रायः बोली लगाकर उन्हें खरीद लिया जाता है। इससे मतदाता ठगा हुआ महसूस करता है और लोकतंत्र की जड़ें भी कमजोर होती हैं। 1967 से हरियाणा में हुए दल–बदल के बाद से 'आयाराम–गयाराम' का नारा चर्चित हुआ था। अनेक राजनीतिक चिंतकों और समाज सुधारकों ने लगातार इस प्रवृत्ति पर रोक लगाने की मांग की है। पर कोई भी दल इसके लिए तैयार नहीं है।

फिर सुर्खियों में कंधार अपहरण काण्ड

–ज्योति मल्होत्रा–

वास्तविक जीवन जैसी दिखने वाली वेब सीरीज के साथ समस्या यह है कि वह अपने साथ बहुत सी पुरानी यादें लेकर आती है। 'आईसी 814 रू कंधार हाईजैक' नामक इस सीरीज के साथ मुश्किल यह हो रही है कि यह भारत को कमजोर दिखाती है रू निशक्त, पस्त–अक्षम। नरेंद्र मोदी सरकार की मुश्किल यह है कि उन काले दिनों और रातों को दफनाना चाहती है दृ जो 1999 में क्रिसमस से पहली शाम और नए साल की पूर्व संध्या के बीच मुसीबत बनकर टूटे थे, जब अटल बिहारी वाजपेयी सरकार को 300 से अधिक यात्रियों की जिंदगी के बदले में तीन आतंकवादियों को रिहा करना पड़ा था दृइसकी जगह वह मधुर, गर्मजोशी भरा और खुशनुमा अहसास बनाए रखना चाहती है, जो एक मजबूत देश का नेतृत्व मजबूत नेता के हाथ होने पर तारी रहता है। परंतु कठिनाई यह है कि इतिहास इस तरह के अहसासों का बंधक नहीं हो सकता। जो होता है, ठीक वही पेश करता है।

उस वक्त की कुछ झलकियां पेश हैं – अपहृत विमान में फंसे यात्रियों के परिवारों की मुश्किलें वाजपेयी सरकार की कमजोरी बन गई, जिनके सिर पर सरकार और अपहर्ताओं के बीच सौदा सिरे न चढ़ने पर हर किस्म के नुकसान का खतरा था। ब्रिटेन में पढ़ा और वहां के लहजे में अंग्रेजी बोलने वाला उमर शेख जो कि भारत सरकार द्वारा रिहा किए गए तीन आतंकवादियों में से एक थादृउससे जब कंधार में भारतीय खुफिया अधिकारी आनंद अर्नी ने पूछा कि आजाद होने का क्या अर्थ है, तो उसने जवाब में ढेरों अपशब्द बके। पाकिस्तान की आईएसआई, जिसका पूरी तरह नियंत्रण था, उसने समझौता वार्ता के दौरान भी बुनियादी शर्तों को बदलवाया – 29 दिसंबर की शाम तक, सहमति केवल एक मसूद अजहर को रिहा करने तक सीमित थी, लेकिन 30 दिसंबर की सुबह होते–होते अपहर्ता तीन आतंकवादियों को रिहा करने की मांग पर अड़ गए। यह वही था, जो होकर रहा।

कभी–कभी समस्या यह होती है कि लोग अतीत को वर्तमान के संदर्भ में देखने लगते हैं। उन्हें इस तथ्य से शर्मिंदगी महसूस होती है कि तत्कालीन विदेश मंत्री जसवंत सिंह भी उसी विमान से कंधार गए थे, जिसमें कुछ पीछे की सीटों पर रिहा किए जाने वाले तीनों आतंकवादी सवार थे, जो उन्हें सुनाने को जोर–जोर से अपशब्द बकते रहे। बहुत से लोगों का कहना है कि मंत्री को नहीं जाना चाहिए था, कई ने सवाल किया कि उन्होंने अपने पद की गरिमा क्यों गिराई? लेकिन 'द ट्रिब्यून' के अभिलेखागार में, उस वक्त में झांकने पर पता चलता है कि 1999 में भारत की स्थिति क्या थी। परमाणु परीक्षण हुए कोई एक साल गुजरा था और भारत अभी भी अंतर्राष्ट्रीय तौर पर अभिशप्त–सा था और आगामी गर्मी में अमेरिकी राष्ट्रपति क्लिंटन का दौरा होना तय था। पाकिस्तान के साथ कारगिल युद्ध खत्म हुए बमुश्किल चंद महीने बीते थे। उस सप्ताह, जब अपहृत हुए विमान ने काठमांडू से अमृतसर होते हुए कंधार के लिए उड़ान भरी, जसवंत सिंह ने मदद के लिए अमेरिका, ब्रिटेन और अन्य जगहों पर अपने कई समकक्षों को संपर्क करने की कोशिश की– लेकिन किसी ने उनका फोन नहीं उठाया। यह सप्ताह नए साल की खुशियां मनाने का था। आप जब जश्न मनाने में व्यस्त हों, ऐसे में तीसरी दुनिया के देश का कोई परेशान आदमी आपको उस समय फोन करे, तो आप केवल यही सोच सकते हैं कि अपनी समस्याओं से वह खुद क्यों नहीं निबट लेता? यही चीज है जिससे असली कमजोरी झलकती है। भले ही आप मदद पाने के लिए कितने भी अधीर हों, लेकिन कोई आपका फोन नहीं उठाना चाहता।

'रॉ' के तत्कालीन प्रमुख एएस दुलत के अनुसार, जसवंत सिंह उस सप्ताह दिल्ली में 'अकेले पड़े एक आदमी' थे। उनको लगा कि यदि कोई वरिष्ठ व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से लेन–देन प्रक्रिया की देखरेख करने साथ नहीं गया, तो कहीं अंतिम समय में ऐसा कुछ न हो जिससे यात्रियों की जान खतरे में पड़ जाए। सच तो यह है कि भारतीय वार्ताकार कंधार में कमजोर पड़े प्रतीत हुए क्योंकि उनके पास अपनी बात मनवाने की गुंजाइश बहुत कम या न के बराबर थी। विमान दुश्मन के इलाके में था। कठपुतलियों की डोर आईएसआई के हाथ में थी और सभी पत्ते भी उसके हाथ में थे।

नेटफ्लिक्स सीरीज उन सभी भारतीय दर्शकों को यह असहज सच्चाई स्वीकारने को मजबूर करती है कि हकीकत में हम वह राज्य नहीं हैं जोकि हम मानते रहे कि हम हैं। हम कमजोर थे, और शायद,अब भी हैं। वेब सीरीज ने हम सभी की इस रग को छूआ है कि जब रोशनी बुझ जाती है और हमारे समक्ष केवल हम ही होते हैं, तो क्या सच है और क्या नहीं, यह हमें पता होता है। हम जानते हैं कि हम उतने तगड़े नहीं हैं जितना खुद को मानते हैं।

कुछ लोग कह सकते हैं कि 25 साल का समय बहुत लंबा होता है और भारत काफी आगे निकल चुका है– वे पाकिस्तान के साथ वार्ता के संबंध में प्रधानमंत्री मोदी द्वारा अपनाए गए सख्त रुख को गिनाते हैं। कुछ अन्य लोगों का इशारा 2016 में अभूतपूर्व सर्जिकल स्ट्राइक की तरफ होगा, जब भारतीय सशस्त्र बलों ने वास्तविक नियंत्रण रेखा पार की और पाकिस्तानी सेना द्वारा समर्थित आतंकवादियों के खिलाफ सफलतापूर्वक अभियान चलाये।

फिर भी, हम जानते हैं कि कमजोरी बनी हुई है, भीतर और बाहर। पिछले सप्ताह की शुरुआत में सिंगापुर में प्रधानमंत्री मोदी द्वारा चीनियों पर कसे तंजों के बावजूद हकीकत यह है कि लद्दाख में चीनियों ने हमारे सैनिकों को उस बड़े हिस्से में गश्त करने से वर्जित कर रखा है, जहां पर वे साल 2020 तक गश्त कर सकते थे। जम्मू संभाग में भी, जहां पर आतंकवादियों ने सशस्त्र बलों के 18 कर्मियों पर हमला कर शहीद कर दिया। सिंधुदुर्ग में, जहां शिवाजी की एक मूर्ति अनावरण के कुछ ही महीनों में ढह गई, क्योंकि ठेकेदार ने घटिया सामग्री का इस्तेमाल किया था। पंजाब में, जहां पर नशीली दवाओं की समस्या कल्पना से कहीं ज़्यादा बदतर है। मणिपुर में, जहां पर मैतेई कट्टरपंथी अपने साथी बाशिंदों मणिपुरियों पर ड्रोनों से हमले कर रहे हैं।

यह स्वीकार करने में कहीं अधिक भलाई है कि हम चीनियों के सामने नहीं ठहर सकते। कम–से–कम इस स्वीकारोक्ति में ईमानदारी तो होगी। वैसे भी आर्थिक रूप से वह हम से पांच गुणा बड़ा है। इसलिए इस विषय का सामना करते हुए खुद से सवाल करना बेहतर होगा कि हम चीनियों के सामने खड़े होने लायक क्यों नहीं हैं?

चीन की आर्थिकी भारतीय अर्थव्यवस्था से पांच गुणा बड़ी क्यों है, जबकि माओ के चलाए 'लॉन्ग मार्च' की बीजिंग में परिणति लगभग उसी समय (1949 में) थी, जब भारत स्वतंत्र हुआ था? इसका उत्तर हमेशा यह नहीं हो सकता कि चीन एक तानाशाही है और भारत एक लोकतंत्र हैदृ जिसमें अपनी पीठ थपथपाना शामिल है। इससे भी बदतर कुछ है। शिवाजी की मूर्ति बनाने वाले ठेकेदार को आखिरकार गिरफ्तार कर तो लिया गया है, लेकिन यह हमें मोदी के पुराने नारे की याद दिलाता हैदृ'न खाऊंगा, न खाने दूंगा' यानी न कभी खुद भ्रष्टाचार करूंगा, न ही करने दूंगा। निश्चित रूप से देश में सभी खराब कामों के लिए प्रधानमंत्री जिम्मेदार नहीं हैं, तब भी नहीं जब उनकी पार्टी उस महाराष्ट्र में गठबंधन में हो, जहां पर यह अपराध हुआ है।

शायद यह स्वीकार करना कहीं बेहतर है कि आप उतने मजबूत नहीं हैं जितना आप होने का दिखावा करते हैं। न लद्दाख में, न सिंधुदुर्ग में या फिर,न ही कंधार में।–लेखिका 'द ट्रिब्यून' की प्रधान संपादक हैं।

क्षमा की धरती को उर्वरा बनाते हैं मैत्री के फूल

–ललित गर्ग–

जैनधर्म की त्याग प्रधान संस्कृति में पर्युषण पर्व का अपना अपूर्व एवं विशिष्ट आध्यात्मिक महत्व है। यह एकमात्र आत्मशुद्धि का प्रेरक पर्व है। इसीलिए यह पर्व ही नहीं, महापर्व है। संपूर्ण जैन समाज इस पर्व के अवसर पर जागृत एवं साधनारत हो जाता है। आठ दिनों की कठोर साधना के बाद मैत्री दिवस का आयोजन होता है। पर्युषण पर्व का हृदय है–'क्षमापना दिवस' जिसे मैत्री दिवस भी कहते हैं। इस दिन अपनी भूलों या गलतियों के लिए क्षमा मांगना एवं दूसरों की भूलों को भूलना, माफ करना, यही इस पर्व को मनाने की सार्थकता सिद्ध करता है। यदि कोई व्यक्ति इस दिन भी दिल में उलझी गांठ को नहीं खोलता है, तो वह अपने सम्यग्दर्शन की विशुद्धि में प्रश्न चिन्ह खड़ा कर लेता है। क्षमायाचना करना, मात्र वाचिक जाल बिछाना नहीं है। परंतु क्षमायाचना करना अपने अंतर को प्रसन्नता से भरना है। बिछुड़े हुए दिलों को मिलाना है, मैत्री एवं करुणा की स्रोतस्विनी बहाना है। मैत्री पर्व का दर्शन बहुत गहरा है। मैत्री तक पहुंचने के लिए क्षमायाचना की तैयारी जरूरी है। क्षमा लेना और क्षमा देना मन परिष्कार की स्वस्थ परम्परा है। क्षमा मांगने वाला अपनी कृत भूलों को स्वीकृति देता है और भविष्य में पुनः न दुहराने का संकल्प लेता है जबकि क्षमा देने वाला आग्रह मुक्त होकर अपने ऊपर हुए आघात या हमलों को बिना किसी पूर्वाग्रह या निमित्तों को सह लेता है। क्षमा ऐसा विलक्षण आधार है जो किसी को मिटाता नहीं, सुधारने का मौका देता है। भगवान महावीर ने कहा–'अहो ते खंति उत्तमा'–क्षांति उत्तम धर्म है। 'तितिक्खं परमं नच्चा'–तितिक्षा ही जीवन का परम तत्व है, यह जानकर क्षमाशील बनो। पयुर्षण महापर्व से जुड़ा मैत्री पर्व मानव–मानव को जोड़ने व मानव हृदय को संशोधित करने का पर्व है, यह मन की खिड़कियों, रोशनदानों व दरवाजों को खोलने का पर्व है, जो एकाग्रता एवं एकांत आध्यात्मिक जिज्ञासाएं जगाकर एक समृद्ध एवं अलौकिक अनुभव तक ले जाता है। इस भीड़भाड़ से कहीं दूर सबसे पहली जो चीज व्यक्ति इस पर्युषण की साधना से सीखता है वह है –'अनुशासनयुक्त मैत्रीमय जीवन।' यह विलक्षण साधना तनावमुक्ति का विशिष्ट प्रयोग है जिससे शरीर को आराम मिलता है, अपने आपको, अपने भीतर को, अपने सपनों को, अपनी आकांक्षाओं तथा उन प्राथमिकताओं को जानने का यह अचूक तरीका है, जो घटना–बहुल जीवन की दिनचर्या में दब कर रह गयी है। इस दौरान परिवर्तन के लिये कुछ समय देकर हम अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकते हैं तथा साथ ही इससे अपनी आंतरिक प्रकृति को समझ सकते हैं, उसे उन्नत एवं समृद्ध बना सकते हैं।

भगवान महावीर ने क्षमा यानि समता का जीवन जीया। वे चाहे कैसी भी परिस्थिति आई हो, सभी परिस्थितियों में सम रहे। ''क्षमा वीरो का भूषण है''–महान् व्यक्ति ही क्षमा ले व दे सकते हैं। पर्युषण पर्व क्षमा के आदान–प्रदान का पर्व है। इस दिन सभी अपनी मन की उलझी हुई ग्रंथियों को सुलझाते हैं, अपने भीतर की राग–द्वेष की गांठों को खोलते हैं वह एक दूसरे से गले मिलते हैं। पूर्व में हुई भूलों को क्षमा के द्वारा समाप्त करते हैं व जीवन को पवित्र बनाते हैं। पर्युषण महापर्व का समापन मैत्री दिवस के साथ होता है। इस तरह से पर्युषण महापर्व एवं क्षमापना दिवस– यह एक दूसरे को निकटता में लाने का पर्व है। यह एक दूसरे को अपने ही समान समझने का पर्व है। गीता में भी कहा है –'आत्मौपम्येन सर्वत्रः, समे पश्यति योर्जुन''–श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा–हे अर्जुन ! प्राणीमात्र को अपने तुल्य समझो। भगवान महावीर ने कहा–''मित्ती में सव्व भूएसु, वेरंमज्झण केणइ'' सभी प्राणियों के साथ मेरी मैत्री है, किसी के साथ वैर नहीं है। मानवीय एकता, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व, मैत्री, शोषणविहीन सामाजिकता, नैतिक मूल्यों की स्थापना, अहिंसक जीवन, आत्मा की उपासना शैली का समर्थन आदि तत्त्व इस पर्व के मुख्य आधार हैं। ये तत्त्व जन–जन के जीवन का अंग बन सके, इस दृष्टि से इस महापर्व को जन–जन का पर्व बनाने के प्रयासों की अपेक्षा है।

पर्युषण पर्व आत्म उन्नति, अहिंसा, शांति और मैत्री का पर्व है। अहिंसा और मैत्री के द्वारा ही शांति मिल सकती है। आज जो हिंसा, युद्ध, आतंक, आपसी–द्वेष, नक्सलवाद एवं भ्रष्टाचार जैसी ज्वलंत समस्याएं न केवल देश के लिए बल्कि दुनिया के लिए चिंता का बड़ा कारण बनी हुई है और सभी कोई इन समस्याओं का समाधान चाहते हैं। उन लोगों के लिए मैत्री पर्व एक प्रेरणा है, पाथेय है, मार्गदर्शन है और अहिंसक–निरोगी–शांतिमय जीवन शैली का प्रयोग है। आज भौतिकता एवं स्वार्थपूर्ण जीवन की चकाचौंध में, भागती जिंदगी की अंधी दौड़ में इस पर्व की प्रासंगिकता बनाये रखना ज्यादा जरूरी है। इसके लिए जैन समाज संवेदनशील बने विशेषतः युवा पीढ़ी मैत्री पर्व की मूल्यवत्ता से परिचित हो और वे आत्मचेतना को जगाने वाले इन दुर्लभ क्षणों से स्वयं लाभान्वित हो और जन–जन के सम्मुख मैत्री का एक आदर्श प्रस्तुत करे।

तथागत बुद्ध ने कहा–क्षमा ही परमशक्ति है। क्षमा ही परम तप है। क्षमा धर्म का मूल है। क्षमा के समकक्ष दूसरा कोई भी तत्व हितकर नहीं है। क्योंकि प्रेम, करुणा और मैत्री के फूल सहिष्णुता और क्षमा की धरती पर ही खिलते हैं। 'सबके साथ मैत्री करो' यह कथन बहुत महत्त्वपूर्ण है किंतु हम वर्तमान संबंधों को बहुत सीमित बना लेते हैं। दर्द सबका एक जैसा होता है, पर हम चेहरों को देखकर अपना–अपना अन्दाज लगाते हैं। यह स्वार्थपरक व्याख्या हमें प्रेम से जोड़ सकती है मगर करुणा से नहीं। प्रेम में स्वार्थ है, राग–द्वेष के संस्कार है, जबकि करुणा परमार्थ का पर्याय बनती है। कहा जाता है–'वसुधैव कुटुम्बकम्' वसुधा कुटुम्ब है, परिवार है। 'मित्ती में सव्व भूएसु वेरं मज्झ न केणई'– यह सार्वभौम अहिंसा एवं सौहार्द का ऐसा संकल्प है जहां वैर की परम्परा का अंत होता है।

मित्रता का भाव हमारे आत्म–विकास का सुरक्षा कवच है। आचार्य श्री तुलसी ने इसके लिए सात सूत्रों का निर्देश किया। मित्रता के लिए चाहिए– विश्वास, स्वार्थ–त्याग, अनासक्ति, सहिष्णुता, क्षमा, अभय, समन्वय। यह सप्तपदी साधना जीवन की सार्थकता एवं सफलता की पृष्ठभूमि है। विकास का दिशा–सूचक यंत्र है। मित्रता का यह पर्व आमंत्रित कर रहा है अपनी ओर, बांहें फैलाये हुए, हमें बिना कुछ सोचे, ठिठके बगैर, भागकर मित्रता की पगडंडी को पकड़ लेने के लिये। जीवन रंग–बिरंगा है, यह श्वेत है और श्याम भी। मित्रता की यही सरगम कभी कानों में जीवनराग बनकर घुलती है तो कहीं उठता है संशय का शोर। मित्रता को मजबूत बनाता है हमारा संकल्प, हमारी जिजीविषा, हमारी संवेदना लेकिन उसके लिये चाहिए समर्पण एवं अपनत्व की गर्माहट। यह जीना सिखाता है, जीवन को रंग–बिरंगी शक्ल देता है। प्रेरणा देता है कि ऐसे जिओ कि खुद के पार चले जाओ। ऐसा कर सके तो हर अहसास, हर कदम और हर लम्हा खूबसूरत होगा और साथ–साथ सुन्दर हो जायेगी जिन्दगी।

मानवीय संवेदनाओं एवं आपसी रिश्तों की जमीं सूखती जा रही है ऐसे समय में एक दूसरे से जुड़े रहकर जीवन को खुशहाल बनाने और दिल में जादुई संवेदनाओं को जगाने का सशक्त माध्यम है मैत्री दिवस। क्षणिक और स्वार्थों पर टिकी मित्रता वास्तव में मित्रता नहीं, केवल एक पहचान मात्र होती है ऐसे मित्र कभी–कभी बड़े खतरनाक भी हो जाते हैं। जिनके लिए एक विचारक ने लिखा है– ''पहले हम कहते थे, हे प्रभु! हमें दुश्मनों से बचाना परन्तु अब कहना पड़ता है, हे परमात्मा, हमें दोस्तों से बचाना।'' दुश्मनों से भी ज्यादा खतरनाक होते हैं दोस्त। विश्व मैत्री दिवस वैयक्तिक स्वार्थों को एक ओर रखकर औरों को सुख बांटने एवं दुःख बटोरने की मनोवृत्ति को विकसित करने का दुर्लभ अवसर प्रदत्त करता है। इस दिवस को मनाने का मूल हार्द यही है कि मित्रता में विचार–भेद और मत–भेद भले ही हों मगर मन–भेद नहीं होना चाहिए। क्योंकि विचार–भेद क्रांति लाता है जबकि मन–भेद विद्रोह। क्रांति निर्माण की दस्तक है, विद्रोह बरबादी का संकेत।

जहां इंसान और सांप एक साथ रहते हैं

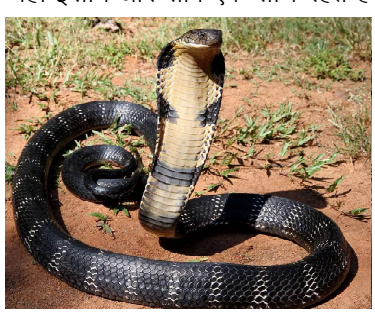

–दिव्यांशी भदौरिया–

इस देश में कई अजब–गजब चीजें को देखने को मिल जाएगी। भारत का एक ऐसा गांव जहां लोग सांपों के साथ एक खास रिश्ता रखते हैं। इन सांपो को घर में पालते हैं और इनके साथ बच्चों को भी खेलने की इजाजत होती है। हालांकि, सबसे हैरान बात यह है कि सांपो किसी को नुकसान तक नहीं पहुंचाते।

भारत एक ऐसा देश है जहां अजब–गजब चीजें देखने को मिल जाएंगी। इस देश में हैरान करने वाली कई चीजें आपको देखने मिल जाएंगी। भारत में ऐसे कई अनोखें गांव है, जिनकी संस्कृति और रिति–रिवाज भारत के बाकी हिस्सों से काफी अलग हैं। इन्हीं में से एक ऐसा गांव जहां कोई कुत्ता या बिल्ली नहीं, बल्कि कोबरा सांप पालते हैं और उन्हें परिवार का हिस्सा मानते हैं। यह गांव महाराष्ट्र का शेतफस गांव है, जो काफी रहस्यमई की तरह है। शेतफल गांव महाराष्ट्र के सोलापुर जिले में स्थित है। बता दें कि इस गांव में हर घर में सांप मिल जाएंगे। दरअसल, गांव वाले इन सांपों से बिल्कुल नहीं डरते, बल्कि उनके साथ खेलते हैं और उन्हें दूध भी पिलाते हैं।

गांव के लोगों को मानना है कि सांप भगवान शिव का प्रतीक हैं, इसलिए वे सांपों की पूजा करते हैं और उन्हें अपना परिवार मानते हैं। गांव में कई मंदिर भी जहां सांपों की पूजा होती है। शेतफल गांव के लोग बताते हैं कि उनके पूर्वजों ने सांपों को पालना शुरु किया था। तभी से यह परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी चलती आ रही है। गांव वाले सांपो को पकड़ना और उन्हें पालना काफी अच्छे से जानते हैं। हैरान करने वाली यह बात है कि इतने सारे सांपों के बीच रहते हुए भी इस गांव के लोगों को सांप काटने का डर नहीं लगता। वे कहते हैं कि सांप कभी उनको नहीं काटते।

यह गांव अब पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केंद्र बन गया है। शेतफल गांव में लोग दूर–दूर से इस गांव को देखने आते हैं। गांव वाले पर्यटकों को सांप के बारे में बताते हैं और उन्हें सांपों को कैसे संभालते हैं।

शेतफल गांव में सांप को पालना आसान नहीं है। गांव वालों को काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। सांपों के लिए खात तरह के भोजन की जरुर पड़ती है। इसके अलावा, सांपों को बीमारियों से बचाना काफी बड़ी चुनौती है। सरकार भी इस गांव के संरक्षण के लिए काफी प्रयास कर रही है। सरकार भी इस गांव को एक पर्यटन स्थल के रुप में विकसित करने का प्लान कर रही है। इसके साथ ही, सरकार गांव वालों को सांपों के सरक्षण के लिए ट्रेनिंग दे रही है।

नगर पालिका में सभासदों ने कर निरीक्षक को पीटा, कामकाज ठप

संवाददाता—देवरिया। नगर पालिका परिषद कार्यालय में सोमवार की दोपहर कुछ सभासदों ने कर निरीक्षक को पीट दिया। इसे बौखलाए कर्मचारियों ने कामकाज ठप कर दिया। कर निरीक्षक ने आरोपी सभासद के खिलाफ केस दर्ज करने के लिए कोतवाली में तहरीर दिया है। घटना के बाद नगर पालिका में काफी देर तक अफरा—तफरी का माहौल रहा। नगर पालिका परिषद में दोपहर को कुछ सभासद अचानक से कर निरीक्षक हिमांशु गुप्ता के कक्ष में पहुंच गए। उन्होंने कर निरीक्षक के सभासद कक्ष में बुलाने के बावजूद नहीं पहुंचने पर नाराजगी जताई। इसी बात को लेकर बहस होते—होते कहासुनी और फिर मारपीट होने लगी। सभासदों ने कर्मचारियों को बाहर निकाल कर निरीक्षक को पीटना शुरू कर दिया। सूत्रों की माने तो मोहल्ले में साइन बोर्ड को लेकर चर्चा के लिए सभासदों ने नगर पालिका की पुरानी बिल्डिंग स्थित सभासद कक्षा में कर निरीक्षक को बुलाया था। कर निरीक्षक वहां नहीं पहुंचे। इससे नाराज होकर कुछ सभासदों ने कर निरीक्षक के कक्ष में पहुंच कर उनकी पिटाई कर दी। घटना के बाद नगर पालिका के सभी कर्मचारी हड़ताल पर चले गए।

आक्रोशित कर्मचारियों ने इससे अधिकारियों को भी अवगत कराया। इसके बाद कोतवाली में पहुंचकर कर निरीक्षक ने सभासदों के खिलाफ तहरीर दी। उन्होने मारपीट के साथ ही सरकारी पत्रावलियों को फाड़ने का भी आरोप सभासदों पर लगाया है। मामले में नगर पालिका के अधिशासी अधिकारी संजय तिवारी ने भी कोतवाली प्रभारी को पत्र लिखकर कार्रवाई की मांग की है।

बाल विकास परियोजना कार्यालयों से गायब है आधार बनाने की मशीन

संवाददाता—बलरामपुर। जिले की दस बाल विकास परियोजनाओं में आधार कार्ड बनाने के लिए भेजी गई मशीन व टैबलेट लापता हैं। आम जन परियोजना कार्यालय पर आधार कार्ड बनवा सकेंगे इसकी व्यवस्था तीन साल पहले की गई थी। मशीनें न होने पर आधार कार्ड बनवाने व संशोधन का कार्य बाल विकास परियोजनाओं पर नहीं हो रहा है। वहां जाने पर लोगों को बैरंग लौटना पड़ता है। प्रधानमंत्री योजनान्तर्गत घर—घर प्रत्येक लाभार्थियों को मुफ्त राशन देने की योजना संचालित है। राशन उन्हीं को मिल रहा है जिनका आधार अपडेट है। इस कार्य के लिए किसान भाई बैंक, जन सुविधा केन्द्र व डाक घरों का चक्कर लगा रहे हैं। उन्हें आधार संशोधन के लिए दो—दो महीने की तारीख दी जा रही है। लोग 20—20 किलोमीटर की दूरी तय करके जाते हैं, लेकिन आधार कार्ड में संशोधन नहीं हो पा रहा है। बैंक, डाकघर व जन सुविधा केन्द्रों की भीड़ करने के लिए सरकार ने बाल विकास परियोजनाओं को आधार कार्ड बनाने, संशोधन आदि के लिए मशीन उपलब्ध कराई थी। शून्य से पांच वर्ष तक के बच्चों का आधार नामांकन के लिए टैबलेट दिया था। इस कार्य के लिए कर्मियों को प्रशिक्षित भी किया गया था। आज की तारीख में किसी भी परियोजना कार्यालय पर मशीने उपलब्ध नहीं हैं। श्याम सुंदर व मनोहर ने बताया कि वे गैंड़ास बुजुर्ग कार्यालय आधार में संशोधन कराने गए थे। वहां बताया गया कि मशीन नहीं है। यही हाल शिवपुरा का भी है। बलरामपुर, श्रीदत्तगंज व रेहरा बाजार में भी मशीनें नहीं हैं। इस सन्दर्भ में बाल विकास परियोजना अधिकारी निहारिका विश्वकर्मा से पक्ष लेने का प्रयास किया गया तो उन्होंने कहा कि वह अभी एडीएम साहब के साथ बैठक में हैं।

आधी रात को आर्केस्ट्रा डांसरों के घर फार्च्यूनर सवार मनबढ़ों का धावा, जबरन गाड़ी में लादा और उठा ले गए

संवाददाता—कुशीनगर। आधी रात को फॉर्च्यूनर कार सवार मनबढ़ों ने आर्केस्ट्रा डांसरों के घर धावा बोल दिया। उन्होंने फायरिंग कर दहशत फैलाई, डांसरों को जबरन गाड़ी में लादा और उठा ले गए। आर्केस्ध्ट्रा डांसरों के मकान मालिक ने पुलिस को घटना के बारे में जानकारी दी। सूचना पाते ही एक्टिव हुई पुलिस ने रात भर कुशीनगर के चप्प्पे—चप्प्पे की निगरानी की और भोर होते—होते मनबढ़ युवकों को पकड़कर डांसरों को उनके चंगुल से छुड़ा लिया। आरोपी युवकों से पूछताछ की जा रही है।

यह घटना, कुशीनगर के रामकोला के चंदरपुर गोबरही चौराहे की है। यहां नैमुल अंसारी की मकान में किराए पर आर्केस्ट्रा की दो डांसर रहती हैं। रविवार की रात 12 बजे के बाद फॉर्च्यूनर से कुछ मनबढ़ युवक डांसरों के घर पहुंचे। उन्होंने डांसरों को धमका कर गाड़ी में बैठने को कहा। डांसरों ने इनकार किया तो मनबढ़ गाली— गलौज पर उतर आए। उन्होंने फायरिंग कर दहशत फैलाने की कोशिश की। इसके बाद दोनों डांसरों को गाड़ी में जबरन बिठाकर फरार हो गए।

मकान मालिक ने उन्हें ऐसा करने से रोका तो उसे भी धमकी दी गई। बाद में मकान मालिक ने डायल 112 पर फोन कर पुलिस को जानकारी दी। कुछ ही घंटो में इलाके की सभी सड़कों पर पुलिस ने बैरिकेडिंग लगा कर चेकिंग शुरू कर दी। भोर में कप्तानगंज थाना क्षेत्र में पुलिस ने गाड़ी पकड़ ली। डांसरों को सरक्षित बरामद कर लिया गया है। चार मनबढ़ पकड़े गए है। पुलिस इन सबसे पूछताछ कर रही है। पूरी घटना चौराहे पर लगे सीसीटीवी कैमरे में रिकॉर्ड हो गई है।

स्टाक उपलब्ध कराने की एसडीएम से मांग

संवाददाता—गोण्डा। स्थानीय विकासखंड के करनीपुर की ग्राम प्रधान ने एसडीएम को प्रार्थना पत्र देकर सितम्बर माह का राशन स्टाक सम्बद्ध दुकान सदाशिव ग्राम पंचायत रानीपुर को उपलब्ध कराने की मांग की है। ग्राम प्रधान सरोज ने दिए गए प्रार्थना पत्र में कहा है कि ग्राम पंचायत करनीपुर के उचित दर बिक्रेता द्वारा राशन वितरण कालाबाजारी के सम्बन्ध में ग्रामवासियों द्वारा शिकायत की गई। जिसमें डीएम के आदेश से हुई जांच में एसडीएम ने भारी अनियमिताओं को देखते हुए दुकान निलंबित कर संबंधित दुकान सदाशिव पुत्र राम प्रसाद ग्राम पंचायत रानीपुर में सम्बद्ध कर दिया था। 07 सितंबर से वितरण दिवस प्रारम्भ होने के बाद भी 09 सितंबर तक उचित दर बिक्रेता व उनके संचालक द्वारा सम्बद्ध उचित दर बिक्रेता सदाशिव को सम्बन्धित आवश्यक वस्तुओं का नियमानुसार उठान नहीं करवाया गया। एआरओ सप्लाई ने बताया कि जल्द ही स्टॉक उपलब्ध कराकर वितरण कर जाएगा।

पिकअप से एक गाय और पांच बछड़े बरामद, गाड़ी छोड़ तस्कर भागे

संवाददाता—देवरिया। मईल—मुसैला मार्ग पर भलुअनी दुबे गांव के पास पुलिस ने रविवार भोर में एक पिकअप पकड़ा है। पिकअप में एक गाय और पांच बछड़ों को लादकर तस्कर वध के लिए बिहार ले जा रहे थे। सूचना मिलते ही सक्रिय हुई पुलिस के गिरफ्त में आता देख तस्कर पिकअप छोड़ भाग निकले। पिकअप में लदी गाय और चार बछड़ों की मौत हो चुकी थी। पुलिस ने मरे गाय और बछड़ों का पोस्टमार्टम कराया। इसके बाद अज्ञात तस्करों के खिलाफ केस दर्ज कर आवश्यक कार्रवाई कर रही है।

एसओ दिग्विजय सिंह ने बताया कि रविवार भोर में मुखबीर के जरिए सूचना मिली की तस्कर एक पिकअप में लादकर गायों को वध के लिए बिहार ले जा रहे हैं। तस्कर मईल—मुसैला मार्ग होते हुए सलेमपुर के रास्ते बिहार निकलने की तैयारी में हैं। सूचना मिलते ही मयफोर्स मईल—मुसैला मार्ग पर पहुंचे तभी मईल के तरफ से तेजी से एक पिकअप आता दिखाई पड़ा। पुलिस की गाड़ी देख पिकअप चालक गाड़ी की और स्पीड बढ़ा दी। टीम ने पीछा करना शुरू किया इस दौरान भलुअनी दुबे गांव के पास पिकअप का अगला एक चक्का ब्लास्ट कर खेत में चला गया। इस दौरान चालक और तस्कर पिकअप से कूदकर भाग निकले। पिकअप में एक गाय समेत छह बछड़ों को लादा गया था। जिसमें एक गाय समेत पांच बछड़ों की मौत हो गई थी। जबकि एक बछड़ा जीवित था। मरे गाय और बछड़ों का पोस्टमार्टम कराकर अज्ञात तस्करों के खिलाफ पशु गो वध निवारण अधिनियम के तहत केस दर्ज कर आवश्यक कार्रवाई की जा रही है। सीओ सलेमपुर दीपक शुक्ला ने बताया कि केस दर्ज कर पुलिस तस्करों की तलाश कर रही है।

घर में करंट की चपेट में आने से युवक की मौत

संवाददाता—महराजगंज। क्षेत्र के महदेवा दुबे के गोविंदपुर में घर में काम करते समय एक युवक की करंट के चपेट में आने से मौत हो गई। इससे परिजनों में कोहराम मच गया।परिजनों का रो—रोकर बुरा हाल है। फरेंदा थाना क्षेत्र के महदेवा दुबे के गोविंदपुर निवासी अनिल (35) सोमवार को दिन में करीब नौ बजे निर्माणाधीन मकान में कुछ काम कर रहे थे। उसी दौरान घर में गुजर रहे तार कटा होने के कारण अचानक करंट की चपेट में आ गए। घटना के बाद परिजनों ने युवक को आनन—फानन में इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बनकटी ले गए। जहां चिकित्सक ने युवक को मृत घोषित कर दिए। युवक के मौत की खबर परिजनों को मिली तो घर में कोहराम मच गया। युवक के दो बच्चे हैं। सीओ अनिरूद्ध कुमार ने बताया कि सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

मदनपुर में सेमरा पुल से 12वीं की छात्रा ने राप्ती नदी में लगाया छलांग, लापता

संवाददाता—देवरिया। जिले के मदनपुर कस्बा के सेमरा पुल से 12वीं की एक छात्रा ने राप्ती नदी में छलांग लगा दिया। जानकारी होने पर आसपास के लोगों की भीड़ जमा हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस स्थानीय गोताखोरों की मदद से रेस्क्यू करा रही है। पुलिस ने पुल पर मिले स्कूली बैग से मिले आधार कार्ड से छात्रा कर परिजनों को जानकारी दी। मदनपुर कस्बा के राप्ती तट घ्स्थित सेमरा पुल से दिन में एक छात्रा ने नदी में छलांग लगा दिया। वह विशंभरपुर गनियारी स्थित एक इंटर कालेज की छात्रा बताई जा रही है। लोगों का कहना है कि पुल पर रखे बैग से मिले आधार कार्ड पर छात्रा की पहचान भदिला दोयम गांव निवासी रामनिवास की पुत्री व 12वीं की छात्रा नेहा के रुप में हुई। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार वह

मोबाइल से किसी बात करते हुए आई। वह इधर—उधर देखने लगी। जब तक लोग कुछ समझ पाते उसने बैग नीचे रखकर नदी में छलांग लगा दिया। इंस्पेक्टर गोरखनाथ सरोज ने बताया कि छात्रा की नदी में तलाश कराई जा रही है। फिलहाल नदी में छलांग लगाने का कारण स्पष्ट नहीं हो सका है।

चलती कार में दलित लड़की से गैंगरेप, दो आरोपी गिरफ्तार

संवाददाता—गोण्डा। अयोध्या के बाद अब गोंडा जिले से दरिंदगी का मामला सामने आया है। यहां एक दलित लड़की के साथ दो युवकों ने चलती कार में गैंगरेप किया गया। गैंगरेप की सूचना पर हड़कंप मच गया। आनन—फानन में पुलिस ने कार्रवाई करते हुए दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। थाना कोतवाली नगर के प्रभारी निरीक्षक मनोज कुमार पाठक ने सोमवार को बताया कि शहर के एक मोहल्ले की रहने वाली दलित महिला ने दो युवकों पर, अपनी 17 वर्षीय बेटी को मोबाइल फोन दिलाने के बहाने बुलाकर उसके साथ कार में सामूहिक दुष्कर्म किए जाने का आरोप लगाया है।

उन्होंने बताया कि महिला की शिकायत के अनुसार, शनिवार की देर शाम दलित महिला अपने पति और बेटी के साथ किसी काम से अपनी रिश्तेदारी में गई थी। वहां पर पंतनगर मोहल्ला निवासी आरिफ और बलरामपुर जिले के नगर कोतवाली थाना क्षेत्र के भगौतीगंज निवासी रिजवान ने उसकी बेटी को मोबाइल फोन दिलाने का झांसा देकर अपनी कार में बैठा लिया। उसे लेकर वे सर्कुलर रोड पर एक सुनसान स्थान पर ले गए, जहां उसके साथ दोनों ने चलती कार में ही गैंगरेप किया। पाठक ने बताया कि इस बीच कार अनियंत्रित होकर बिजली के एक खंभे से टकरा गई, जिसके बाद आरोपी कार को वहीं छोड़कर भाग गए। किसी तरह देर रात घर पहुंची किशोरी ने परिजनों को घटना की जानकारी दी। इसके बाद रविवार को उसकी मां की तरफ से पुलिस में शिकायत की गई। उन्होंने बताया कि प्रकरण में त्वरित कार्रवाई करते हुए दोनों आरोपियों के खिलाफ थाने सुसंगत धाराओं में अभियोग दर्ज कर देर शाम उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। पीड़िता को चिकित्सीय परीक्षण व अन्य कार्यवाही के लिए जिला महिला चिकित्सालय भेजा जा रहा है। पाठक ने बताया कि प्रारंभिक पूछताछ में पता चला है कि आरिफ ने अपने दोस्त से उसकी कार किसी रिश्तेदार के अंतिम संस्कार में जाने के लिए मांगी थी। घटना में प्रयुक्त कार भी बरामद कर ली गई है।

महिलाओं ने समाज में बदलाव के उदाहरण पेश किया —सूर्य प्रताप शाही

संवाददाता—देवरिया। प्रदेश के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने कहा कि महिलाओं को आत्मनिर्भर होने की जरूरत है। महिलाएं ऊर्जा से लबरेज, दूरदर्शिता और प्रतिबद्धता के साथ सभी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हैं। महिलाएं बड़े पैमाने पर समाज में बदलाव के उदाहरण पेश की हैं। श्री शाही सोमवार को पथरदेवा नगर पंचायत सभागार में महिला उत्थान कार्यक्रम के तहत स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि भाजपा की केंद्र और प्रदेश की सरकारें महिलाओं को सशक्त करने के लिए समूह के माध्यम से तमाम योजनाएं चला रही हैं। देश आगे बढ़ रहा है। दुनिया के अंदर भारत विकसित राज्य के रूप में उभर रहा है। चेयरमैन क्रांति सिंह ने कहा कि अनादि काल से ही महिलाएं मानवता की प्रेरणा स्रोत रही हैं।

जिला पंचायत सदस्य सुजीत प्रताप सिंह ने कहा कि कृषि प्रसंस्करण उद्योगों, बैंकिंग सेवाओं और डिजिटलीकरण की सहायता से महिलाओं के सामाजिक और वित्तीय सशक्तिकरण की शुरुआत की जा सकती है। इस दौरान पथरदेवा भाजपा मंडल रमेश सिंह, तरकुलवा चेयरमैन जनार्दन कुशवाहा, सभासद सुशील पांडेय, बृजेश शुक्ला, अजय सिंह, तेज प्रताप सिंह, अवधेश सिंह, अफजल, प्रभाकर राय, दुर्गावती देवी, उर्मिला और पूनम मौजूद थीं।

जेल का निरीक्षण कर बंदियों को दी विधिक जानकारी

संवाददाता—गोंडा। अपर जिला जज व जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव दानिश हसनैन ने सोमवार को जिला कारागार का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने जेल के विभिन्न बैरकों में जाकर बंदियों के रहने और साफ सफाई की व्यवस्था को देखा। एडीजे ने जेल चिकित्सालय में निरीक्षण के दौरान इलाज करा रहे बंदियों से उनके स्वास्थ्य की जानकारी ली। उन्होंने जेल प्रशासन के अधिकारियों को बंदियों के स्वास्थ्य परीक्षण के लिए निर्देश दिया। निरीक्षण के दौरान आयोजित विधिक साक्षरता शिविर में निरुद्ध बंदियों को विधिक जानकारी दी गई। इस दौरान चीफ एलएडीसी विनोद कुमार सिंह, डिप्टी चीफ एलएडीसी अनिमेष चतुर्वेदी, असिस्टेंट एलएडीसी बृजलाल तिवारी, डिप्टी जेलर सुरेश कुमार, कन्हैया लाल तिवारी, राहुल मिश्रा मौजूद रहे।

पुरोहितों के वैदिक मंत्रों से गजानन को रिझा रहे भक्त

संवाददाता—बहराइच। विघ्न विनाशक भगवान गणेश पूजा महोत्सव के तीसरे दिन सोमवार को शहर व ग्रामीण इलाकों में भोर से पुरोहितों के मंत्र गूंजने लगे। सुसज्जित पूजा की थाल लिए श्रद्धालुओं के पग पंडालों की ओर बढ़ चले। विधि विधान से पूजा के बाद शंखनाद, घंटा, वाद्ययंत्रों के निनाद पर गणपति वप्पा की आरती हुई। भगवान एकदंत की पूजा महोत्सव के तीसरे दिन सोमवार को प्रसन्न करने को कहीं गणेश चालीसा, गणेश स्तुति, गणेश स्त्रोत आदि के पाठ हुए, तो प्रातः कालीन व रात की आरती में श्रद्धालुओं का जन सैलाब उमड़ रहा है। घरों में महिलाओं ने एकदंत को रिझाने को भजन संगीत कर वातावरण भक्ति की रसधार से सरोबार कर दिया है।

शहर के ब्राह्मणीपुरा में सोमवार को लाल बाग के राजा जी की भव्य प्रतिमूर्ति, भव्य श्रृंगार, डिजिटल दरबार में काशी से आए विद्वान आचार्यों की टोली ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पूजन अर्चन कराया। सुबह व शाम आरती में श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ा। इस अवसर पर राधारमण यज्ञसैनी, राजेन्द्र गुप्ता, अंशुमान यज्ञसैनी, शशिकांत बाम्बे, राजेन्द्र चाव्हाण, संतोष शेण्डे, मुरारी लाल आदि मौजूद रहे। शहर के गुदड़ी किला मोहल्ले में भी श्री ज्वाला देवी मां मंदिर परिसर में रविवार को पुरोहितों ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पूजा कराई गई। यहां सीताराम यज्ञसैनी, राजेश अवस्थी पप्पू, रमेश कश्यप, युवराज यज्ञसैनी, अमन गुप्ता, सचिन श्रीवास्तव, मनीष सोनी मुन्ना, संतोष कुमार सक्सेना आदि मौजूद रहे।

शहर के काजी कटरा गायत्री नर स्थित मुक्केश्वर महादेव मंदिर में सोमवार को पुरोहितों ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पूजा कराई गई। इस अवसर पर मनोज कुमार गुप्ता, संदीप कुमार सोनी, आशीष कुमार साहू, रवि प्रकाश गुप्ता, विकास पटवा, दिनेश कुमार साहू, विवेक कुमार वाजपेयी आदि मौजूद रहे। शहर के विभिन्न स्थानों के अलावा शिवपुर, रुपईडीहा, मिहींपुरवा आदि इलाकों में भी सोमवार को तीसरे दिन देवों में प्रथम पूज्य भगवान गणेश की विधि विधान से पूजा अर्चना की गई।

पोखरे में नहाने गए युवक की डूबने से मौत

संवाददाता—महराजगंज। कोतवाली क्षेत्र के लखिया थरुआ गांव में स्थित पोखरे में नहाने गए युवक की डूबकर मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस के अनुसार, कोतवाली क्षेत्र के लखिया थरुआ गांव निवासी राजेश तिवारी (25) सोमवार को दोपहर में गांव में स्थित पोखरे में नहाने गया था। इसी दौरान उसमें डूबकर उसकी मौत हो गई है। पोखरे के बगल में एक किसान अपने खेत में दवा का छिड़काव कर रहा था। उसने पोखरे में युवक का शव पानी में उतराया देखा। उसने शोर शराबा मचाना शुरू किया, जिसके बाद आसपास के लोग इकट्ठा हो गए। मौके पर पहुंचे परिजनों ने राजेश तिवारी के शव को देखकर दहाड़ मारकर रोने लगे। सूचना पर पहुंची कोतवाली पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। राजेश तिवारी की अभी शादी नहीं हुई थी। प्रभारी निरीक्षक मनोज कुमार राय ने बताया कि घटना संज्ञान में हैं। युवक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है।

सरयू में डूब रही मां—बेटियों के लिए रक्षक बनें लाला, तीनों को सुरक्षित निकाला

संवाददाता—देवरिया। नगर के सरयू तट स्थित आरती घाट पर सोमवार के सुबह मां और उनकी दो बेटियां स्नान कर रही थीं। इसी बीच गहरे पानी में चले जाने के कारण मां डूबने लगी। जिन्हे बचाने के चक्कर मे दोनो बेटियां भी बहने लगीं। तीनो को नदी मे डूबता देख तट पर मौजूद लाला पांडेय शोर मचाते हुए नही मे छलांग लगा दिए। लोगों ने किसी तरह तीनो को बाहर निकाला। जिससे सुबह— सुबह एक बड़ा हादसा होने से बच गया। डेहरी गांव में कुछ दिन पूर्व एक वृद्ध की मौत हो गई थी। जिनके कर्मकाण्ड के बाद परिवार की महिलाएं सरयू स्नान करने बरहज आई हुई थीं। स्नान के दौरान एक महिला के गहरे पानी में चले जाने के कारण वह डूबने लगीं। लोगों के अनुसार मां को डूबता देख दो पुत्रियां उनके बचाव में आगे बढ़ी। लेकिन वह भी पानी में बहने लगीं। नदी से बाहर निकाले जाने के बाद मां और बेटियां घबराई हुई थीं। उनके चेहरे पर खौफ दिखाई दे रहा था। इंस्पेक्टर राहुल सिंह ने बताया कि सूचना पर पुलिस गई थी। सभी को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया है।

एक हजार नकदी व आभूषण उठा ले गए चोर

संवाददाता—गोण्डा। घर के पीछे सीढ़ी लगाकर चोर रविवार रात घर में घुसकर बक्सा उठा ले गए। बक्सा को घर से थोड़ी दूर तोड़कर उसमें रखा एक हजार रुपए नकद व लाखों के सोने चांदी के आभूषण चोरी करने में सफल रहे। जिसकी शिकायत तरुण कुमार पांडेय उर्फ पिंटू ने पुलिस से की। पुलिस ने मामले की प्राथमिकी दर्ज कर जांच व कार्रवाई शुरू कर दी है। कौड़िया थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत रूकमंगदपुर के मजरा छोलहा के निवासी तरुण कुमार पांडे उर्फ पिंटू ने पुलिस को एक शिकायती पत्र देकर कहा कि वह बीती रात परिवार के साथ अपने घर में सो रहे थे कि चोर घर के पीछे सीढ़ी लगाकर घर में घुस गए और दरवाजा खोलकर घर में रखा बक्सा उठा ले गए। बक्से को घर से थोड़ी दूर ले जाकर तोड़कर उसमें रखा एक हजार रुपए नकद व लाखों के सोने चांदी के आभूषण उठा ले गए। सुबह घर का दरवाजा खुला एवं सामान बिखरा देख सभी लोग आवाक रह गए। जिसकी सूचना डायल 112 व स्थानीय पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस जांच व पड़ताल शुरू की। इस संबंध में प्रभारी निरीक्षक थाना कौड़िया वेद प्रकाश शुक्ला ने बताया कि शिकायत मिली है। मामले की प्राथमिकी दर्ज कर जांच व कार्रवाई की जा रही है।

प्रशिक्षण से बालिकाएं हुनरमंद के साथ स्वावलंबी व सशक्त होंगी

संवाददाता—महराजगंज। लक्ष्मीपुर क्षेत्र के ललाइन पैसिया में स्थित राजीव गांधी शिक्षा पीजी कॉलेज के छात्राओं के लिए निःशुल्क तीन माह का सिलाई बुनाई कढ़ाई प्रशिक्षण (सर्टिफिकेट कोर्स) का शुभारंभ सोमवार को प्रबंधक डॉ. अजीत मणि त्रिपाठी ने किया। कहा कि प्रशिक्षण से बालिकाएं हुनरमंद के साथ—साथ सशक्त बनेंगी। प्रशिक्षण से रोजगार का अवसर मिलेगा और बालिकाएं स्वावलंबी होंगी। विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ. अर्चना पाण्डेय पीजी कालेज नौतनवा रहीं, जबकि अध्यक्षता डा.संजय कुमार शुक्ल ने की। डॉ. पाण्डेय ने कहा कि सिलाई—कढ़ाई का प्रशिक्षण बालिकाओं के लिए मील का पत्थर साबित होगा। शिक्षा के साथ ही हुनरमंद बनने का अवसर मिलेगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम सितम्बर से नवम्बर माह तक कराया जाएगा।

प्रदेश अध्यक्ष ने किसानों को दिलाई भाजपा की सदस्यता

संवाददाता—देवरिया। भाजपा किसान मोर्चा द्वारा सोमवार को जिला पंचायत सभागार में आयोजित सदस्यता अभियान में किसान मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष कामेश्वर सिंह ने किसानों को मिस्ड काल के माध्यम से पार्टी की सदस्यता ग्रहण कराई। उन्होंने कहा कि भाजपा दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी तो है ही साथ ही राजनीतिक दलों में अनूठी पार्टी भी है।

उन्होंने कहा कि भाजपा के संविधान के मुताबिक, हर 5—6 साल बाद नए सिरे से सबको फिर से पार्टी का सदस्य बनाया जाता है। 2 सितंबर से पार्टी फिर से पूरे देश में अपना सदस्यता अभियान शुरू कर चुकी है और पिछले तीन दिन में ही पार्टी ने एक करोड़ सदस्य बना लिए हैं। इस बार किसान मोर्चा की जिले की इकाई को हर मंडल में 1100 सदस्य बनाने का लक्ष्य मिला है।

जिलाध्यक्ष भूपेंद्र सिंह ने कहा कि सदस्यता अभियान का जो लक्ष्य हमें मिला है उससे कहीं अधिक सदस्य बनाकर हम पार्टी को मजबूत करने का कार्य करेंगे। जिला प्रभारी संतराज यादव ने कहा कि प्राथमिक स्तर पर पार्टी का लक्ष्य फिलहाल 10 करोड़ से अधिक लोगों को भाजपा का सदस्य बनाना है। किसान मोर्चा के जिलाध्यक्ष पवन मिश्रा ने कहा कि 2019 तक लगभग 18 करोड़ लोग भाजपा के सदस्य बने थे। संचालन किसान मोर्चा के जिला महामंत्री काशीपति शुक्ला ने किया।

कार्यक्रम को प्रदेश उपाध्यक्ष बंधु उपेंद्र सिंह ने भी संबोधित किया। इस दौरान भगवान यादव, रविंद्र कुंवर राय, दिनेश पांडे, हृदय लाल शर्मा, मुकेश कुमार राय, ओमप्रकाश चौरसिया, विवेक मणि, अजय दुबे वत्स, गिरिजेश सिंह, वाई के तिवारी, सुमंत चतुर्वेदी, विद्यासागर मिश्रा, सुनील चतुर्वेदी, सुशील सिंह, दिवाकर चंद्र यादव, बलवंत सिंह आदि उपस्थित रहे।

भाजपा सदस्यता अभियान 2024 के अंतर्गत सोमवार को कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने देवरिया में अपने राघव नगर स्थित आवास पर वरिष्ठ भाजपा कार्यकर्ता नथुनी सिंह कुशवाहा को विश्व की सबसे बड़ी पार्टी भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण कराई। इस दौरान भाजपा जिलाध्यक्ष भूपेंद्र सिंह भी उपस्थित रहे।

भाजपा सहकारिता प्रकोष्ठ द्वारा महा सदस्यता अभियान 2024 के अवसर पर भूमि विकास बैंक कोआपरेटिव चौराहा पर आयोजित कार्यक्रम को भाजपा जिलाध्यक्ष भूपेंद्र सिंह ने सम्बोधित कर अंत्योदय के मूल मंत्र के साथ प्रत्येक वर्ग के कल्याण और उत्थान हेतु समर्पित भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण कराने के लिए सभी से अपील किया। मुख्य अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश सहकारी विकास बैंक के अध्यक्ष व संगठन के जिला प्रभारी संतराज यादव, सहकारिता के सदस्य और अन्य नेता गण उपस्थित रहे।

त्योहार को लेकर पीस कमेटी की बैठक

संवाददाता—महराजगंज। कोल्हुई थाने में सोमवार को आगामी त्योहार को लेकर पीस कमेटी की बैठक हुई। एसओ सतेंद्र राय के नेतृत्व में हुई बैठक में ग्राम प्रधान, ग्रामीण व पुलिस कर्मी मौजूद रहे। एसओ ने कहा कि बारावफात पर्व को शांतिपूर्ण व आपसी भाईचारे के साथ मनाएं। कहीं भी लगे कि कोई भी व्यवधान उत्पन्न कर सकता है तो तत्काल पुलिस को सूचित करें। ऐसे लोगों से सख्ती से निपटा जाएगा। इस अवसर पर एसआई अंजनी कुमार, राजीव सिंह, जय प्रकाश, राहुल यादव, ग्राम प्रधान पप्पू खान, किताबुल्लाह खान, इसराइल खान, रामकेश प्रजापति, अशोक सिंह, दीना चौधरी, दिनेश रौनियार समेत तमाम लोग मौजूद रहे।

टीन शेड वालों को मिले पीएम आवास योजना का लाभ —प्रधान संघ

संवाददाता—गोण्डा। राष्ट्रीय पंचायतीराज ग्राम प्रधान संगठन के जिलाध्यक्ष उमापति त्रिपाठी ने सोमवार को डीएम को संबोधित मांग पत्र परियोजना निदेशक चंद्र शेखर को सौंपा। जिसमें प्रधान संघ अध्यक्ष ने मांग की है कि ग्राम पंचायत में पूर्व की भांति हुए सर्वेक्षण सर्वे में सम्मिलित किया जाए। जिससे गरीब और पात्र लाभार्थियों को आवास योजना का लाभ मिल सके। उन्होंने मांग पत्र में कहा है कि प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रान) के अन्तर्गत आवास प्लस—2018 की सूची में पात्र लाभार्थियों का नाम जोड़े जाने का निर्णय लिया है। वर्तमान में ब्लाक स्तर पर (पीएमएवाईजी) सर्वे—2024 उन्मुखीकरण गोष्ठी का आयोजन हो रहा है। जिसमें प्रधान व क्षेत्र पंचायत सदस्य गण प्रतिभाग कर रहे हैं। गोष्ठी में इस बात पर चर्चा हो रही है कि जिनके मकान की नींव भरी हो या दीवाल स्तर पर टीन आदि रखा हो वे परिवार आवास योजना के पात्र नहीं होंगे।

गोरखपुर के टेराकोटा का लगेगा नोएडा में स्टाल

संवाददाता—गोरखपुर। जिस उत्पाद के ब्रांड एम्बेसडर खुद मुख्यमंत्री हों, उसका इतराना तो स्वाभाविक होगा। गोरखपुर की माटी के अद्भुत शिल्प टेराकोटा के साथ यही स्थिति है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा पहले इसे ओडीओपी में शामिल किया गया और फिर स्थानीय से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक हर मंच पर ऐसी ब्रांडिंग की कि टेराकोटा शिल्पकारों के लिए काम की कोई कमी नहीं है। टेराकोटा के डिमांड की रीच अब ग्लोबल होने जा रही है। इसका जरिया बनेगा नोएडा में होने वाला यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो। इस इंटरनेशनल ट्रेड शो में गोरखपुर के टेराकोटा के चार स्टाल लगाए जाएंगे। ब्रांडिंग की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए सीएम योगी ने अभी गत दिनों पहली बार गोरखपुर आए उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ को टेराकोटा शिल्प से बनी गणेश जी की प्रतिमा भेंट की। योगी सरकार टेराकोटाकी लोकल के साथ ही ग्लोबल मार्केट में ब्रांडिंग के लिए प्रतिबद्ध है। इसी प्रतिबद्धता को आगे बढ़ाते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में ग्रेटर नोएडा में 25 से 29 सितंबर तक आयोजित होने वाले इंटरनेशनल ट्रेड शो के दूसरे संस्करण में गोरखपुर की ओडीओपी में शामिल टेराकोटा उत्पादों की विस्तृत श्रृंखला को भी प्रदर्शित किया जाएगा।

इस ट्रेड शो में विश्व भर से खरीदार जुटेंगे। इस आयोजन में स्टाल लगने से टेराकोटा शिल्पकारों के हुनर को ग्लोबल मार्केट मिलेगा। राष्ट्रीय पुरस्कार के सम्मानित टेराकोटा शिल्पकार राजन प्रजापति का कहना है कि योगी आदित्यनाथ के मुख्यमंत्री बनने के पहले भी टेराकोटा शिल्पकारों के पास क्षमता तो थी लेकिन शासन के प्रोत्साहन और उचित प्लेटफार्म की कमी से इसका दायरा संकुचित होता जा रहा था। 2017 तक दम तोड़ रहे इस माटी शिल्प के लिए तारणहार बनकर आए। मुख्यमंत्री बनने के बाद उन्होंने 2018 में टेराकोटा को एक जिला एक उत्पाद योजना में शामिल किया और फिर तबसे यह शिल्प नई ऊंचाई को छू रहा है। ओडीओपी में शामिल होने के बाद सरकार से मिल रहे प्रोत्साहन के चलते टेराकोटा का कारोबार साल दर साल विस्तृत होता जा रहा है। इस साल की बात करें तो दिवाली के मद्देनजर सात करोड़ रुपये से अधिक के बाहरी राज्यों के ऑर्डर की सप्लाई की जा चुकी है और शिल्पकार अब त्योहार की स्थानीय आपूर्ति के लिए माल तैयार करने में जुटे हैं। सरकार (खुद सीएम योगी द्वारा) की तरफ से लगातार की जा रही ब्रांडिंग का असर यह है कि आज पुराने शिल्पकारों के पास काम की कोई कमी नहीं है। यही नहीं, टेराकोटा की भविष्य से जुड़ी संभावना को देखकर बड़ी संख्या में नए शिल्पकार और कारीबारी भी इससे जुड़े हैं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का टेराकोटा की मिट्टी शिल्प से बेहद लगाव है। वह इसकी ब्रांडिंग का कोई भी मौका नहीं चूकते हैं। अभी हाल ही में उन्होंने सैनिक स्कूल का उद्घाटन करने गोरखपुर आए उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ को टेराकोटा से बनी गणेश जी की प्रतिमा भेंट की। इसके पहले 5 जून 2022 को गोरखपुर दौरे पर आए तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को भी उन्होंने टेराकोटा की मूर्तियां भेंट की थीं। यही नहीं राष्ट्रपति के परिवार के लिए उन्होंने सर्किट हाउस में टेराकोटा के स्टाल भी लगवाए थे जहां राष्ट्रपति के परिवार और स्टाफ ने टेराकोटा उत्पादों की खूब खरीदारी की थी।

बिजली की बढ़ी दरों से बुनकर परेशान, दरें कम नहीं हुई तो हो जाएंगे बर्बाद

संवाददाता—गोरखपुर। बिजली बिल में हुई बढ़ोतरी को लेकर बुनकर वेलफेयर सोसाइटी का एक प्रतिनिधि मंडल सोसाइटी के अध्यक्ष अजीजुल हई, मसीउद्दीन अंसारी, नसीम अख्तर, इकराम अंसारी एवं मजहर अंसारी के संयुक्त नेतृत्व में मंडलायुक्त से मिलकर ज्ञापन सौंपा गया। प्रतिनिधिमंडल की बातों को गौर से सुन मंडलायुक्त ने प्रतिनिधिमंडल को अस्वस्थ करते हुए कहा कि बुनकरों की जायज मांगों का निस्तारण किया जायेगा। ज्ञापन सौंपने के बाद बुनकरों को संबोधित करते हुए सोसाइटी के अध्यक्ष अजीजुल हई ने कहा कि गोरखपुर का बुनकर बिजली बिल में हुई बढ़ोतरी से बहुत ही परेशान है। ऐसे में शासन व प्रशासन को बुनकर अपनी व्यथा को लेकर अधिकारियों को अवगत कराने की दिशा प्रयासरत है। उन्होंने कहा कि गोरखपुर का बुनकर पहले प्रतिमाह प्रति पावरलूम रुपया 143 जमा करता था। परंतु 1 अप्रैल 2023 से प्रस्तावित नई योजना के तहत प्रतिमाह प्रति पावरलूम रुपया 800 जमा करने का बोझ लाद दिया गया है, जो प्रस्तावित दर के सापेक्ष लगभग साढ़े छः गुना अधिक है। उन्होंने कहा कि कमजोर, गरीब बुनकर इतना रुपए जमा करने में असमर्थ है। हई ने कहा कि सन् 2006 में पावरलूम को रीड स्पेस के आधार पर दो श्रेणी बांट दिया गया है, जो कहीं से भी तर्क व न्याय संगत नहीं है। नसीम अख्तर, मसीउद्दीन अंसारी, मजहर हुसैन अंसारी एवं इकराम अंसारी ने कहा कि उत्तर प्रदेश में मात्र गोरखपुर ही एक ऐसा जिला है, जहां शूटिंग बनता है। इसलिए गोरखपुर का 100 प्रतिशत पावरलूम 68 इंच रीड स्पेस का है। जबकि गोरखपुर में लूमों की संख्या 2960 है। 68 इंच रीड स्पेस के लूम को भी 400 रुपए करने में अधिकारियों को बुनकरों के साथ सहानुभूति की भूमिका निभाने की जरूरत है। जबकि गोरखपुर में लूमों की संख्या 2960 है। यदि बुनकरों के साथ इंसाफ नहीं किया गया तो निश्चित तौर पर गोरखपुर का बुनकर तबाह व बर्बाद हो जायेगा। इस दौरान अजीजुल हई, नसीम अख्तर, मसीउद्दीन अंसारी, मजहर हुसैन अंसारी, मुहम्मद खालिक अंसारी, इकराम अंसारी, शमीम अख्तर, बक्शीश अहमद, इरफान अंसारी, मुहम्मद शमीम, माजिद अख्तर, सिराजुद्दीन, मुहम्मद नौशाद, इजहार अहमद आदि लोग मौजूद रहे।

महंत नृत्य गोपाल दास की हालत गंभीर, हॉस्पिटल ने जारी किया

संवाददाता—अयोध्या। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष व मणिराम दास की छावनी के महंत नृत्य गोपाल दास की हालत गंभीर बनी हुई है। उन्हें रविवार शाम 6रू30 बजे यूरीनरी समस्या और मुंह के रास्ते कम आहार लेने की समस्या के चलते आईसीयू में डॉ. दिलीप दुबे की निगरानी में भर्ती किया गया था। सोमवार दोपहर जारी किए गए हेल्थ बुलेटिन के अनुसार, महंत जी की हालत गंभीर बनी हुई है और आईसीयू में उनका इलाज चल रहा है। डॉक्टरों की एक टीम निरंतर उनके स्वास्थ्य की स्थिति पर नजर रख रही है। पिछले कुछ दिनों से महंत जी का ग्वालियर में उपचार चल रहा था, स्थिति में सुधार नहीं होने के चलते उन्हें मेदांता अस्पताल में लाया गया। मेदांता लखनऊ की मेडिकल विशेषज्ञों की टीम उनके बेहतर इलाज के लिए निरंतर प्रयासरत है। इससे पहले भी महंत दास मेदांता अस्पताल में गंभीर स्थिति में चिकित्सकों का उपचार लेते रहे हैं।

महंत नृत्य गोपाल दास के उत्तराधिकारी महंत कमल नयन दास भी कल शाम लखनऊ पहुंच गए हैं। वह इस समय मेदांता में महंत दास के साथ मौजूद हैं। उन्होंने अमर उजाला को खास बातचीत में बताया था कि महंत दास की तबीयत फिलहाल ठीक है। वह बातचीत कर रहे हैं लेकिन फिर भी उनको चिकित्सकों की निगरानी में रखा गया है। जब उनसे पूछा गया कि क्या कल मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ श्री महंत का हाल—चाल लेने के लिए पहुंच रहे हैं तो उन्होंने कहा कि इसकी जानकारी मुझे नहीं है। वैसे इसके पहले जब भी ट्रस्ट अध्यक्ष यहां भर्ती हुए हैं तो मुख्यमंत्री उनका हाल—चाल लेने के लिए आते रहे हैं, तो इस कड़ी में यदि वह आते हैं तो यह नियमित प्रक्रिया होगी।

तीन चोरी के टुल्लू पंप के साथ युवक धराया

संवाददाता—सिद्धार्थनगर। इटवा पुलिस ने सोमवार को अकड़ारी नाले के पास एक युवक को पकड़ने का दावा किया है। पुलिस ने उसके पास से चोरी के तीन टुल्लू पंप को भी बरामद किया है। पकडे गए युवक को पुलिस ने न्यायालय भेज दिया है। इंस्पेक्टर इटवा श्रीप्रकाश यादव ने बताया कि सोमवार को पुलिस टीम में क्षेत्र में संदिग्धों के तलाश में थी। इस दौरान अकड़ारी नाले के पास एक संदिग्ध युवक खड़ा दिखाई दिया। पुलिस टीम उसे पकड़ कर पूछताछ की तो उसने अपना नाम मिंटू पुत्र लवकुश निवासी गिरारपुर थाना इटवा बताया। पुलिस उसके पास से चोरी के तीन टुल्लू पंप को भी बरामद किया। आरोपी को पकड़ने वालों में एसआई काशीनाथ यादव, कांस्टेबल श्याम सुन्दर भारती,अमित सिंह शामिल रहे।

बच्चों को दिलाई गई स्वच्छता की शपथ

संवाददाता—सिद्धार्थनगर। कन्या जूनियर हाईस्कूल अकबरनगर में सोमवार को स्वच्छ सागरी क्लब अंतर्गत नगर पालिका बांसी की तरफ से स्वच्छ सर्वेक्षण—2024 के प्रचार प्रसार के लिए विद्यालय में बच्चों के बीच पेंटिंग व निबंध प्रतियोगिता कराई गई। साथ ही स्वच्छता की शपथ भी दिलाई गई। इस अवसर पर नगर पालिका के एसबीएम प्रभारी जमील अहमद, प्रभारी प्रधानाचार्य शीला सक्सेना, शिक्षक पूनम त्रिपाठी, मो. इरफान सिद्दकी, रानी, अंचल, रोहित पांडेय, एजाज अहमद आदि मौजूद रहे।

स्वच्छ वायु सर्वेक्षण में देश में चौथे पायदान पर गोरक्षनगरी

संवाददाता—गोरखपुर। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की ओर से जारी स्वच्छ वायु सर्वेक्षण—2024 में 3 से 10 लाख तक की आबादी वाले देश के 43 शहरों में गोरक्षनगरी ने पिछले साल के मुकाबले 11वें स्थान से चौथे स्थान की छलांग लगाई है। शीर्ष पर फिरोजाबाद, दूसरे स्थान पर अमरावती और तीसरे स्थान पर झांसी ने जगह बनाई। इलेक्ट्रिक वाहनों की कमी और लगातार चल रहे सिक्सलेन और फोरलेन के निर्माण कार्यों के कारण कुछ अंक कट गए। लिहाजा 2 अंक से तीसरा, 4.5 अंक से दूसरा और 6.5 अंक से पहला स्थान पाने में गोरक्षनगरी पिछड़ गई।

फिरोजाबाद नगर निगम 197 अंक, अमरावती को 195 अंक और झांसी को 193.5 अंक मिले। जबकि गोरखपुर नगर निगम ने 198 अंक का दावा किया था लेकिन 191.5 अंक ही मिले। इस कारण 3 लाख से 10 लाख तक की आबादी वाली श्रेणी में गोरखपुर को चौथा स्थान मिला। स्वच्छ वायु सर्वेक्षण—2023 में 194 अंक पाकर अमरावती पहले, 168.2 अंक हासिल कर मुरादाबाद दूसरे और गुंटूर 185.5 अंक हासिल कर तीसरे स्थान पर था। जबकि 196 अंक का दावा करने वाला गोरखपुर नगर निगम को सिर्फ 169 अंक मिले और वह 11वें पायदान पर रह गया। पहले, दूसरे और तीसरा पुरस्कार के रूप में क्रमशरू 75 लाख, 50 लाख और 25 लाख रुपये मिलते हैं। नान अटेनमेंट सिटी में शामिल होने के बाद महानगर की आबोहवा की गुणवत्ता सुधार के लिए वित्त वर्ष 2021—22 में 9.69 करोड़ रुपये नगर निगम को मिले। लेकिन यह धनराशि वित्त वर्ष 2022—23 की धनराशि 27.87 करोड़ के साथ कुल 37.51 करोड़ मिली। पुनरू साल 2023—24 में 29.36 करोड़ मिले। कुल मिला कर 66.87 करोड़ रुपये मिले। मिली धनराशि का 86 फीसदी यानी तकरीबन 57.19 करोड़ रुपये नगर निगम उपयोग कर चुका है। अब साल 2024—25 के लिए पुनरू 49.51 करोड़ रुपये मिले हैं।

गौरव सिंह सोगरवाल, नगर आयुक्त ने कहा कि स्वच्छ वायु सर्वेक्षण 2025 में गोरखपुर नगर निगम काफी अच्छा परिणाम देगा। ई—व्हीकल मानक मुताबिक इलेक्ट्रिक वाहनों के परिचालन की कमी, इंफ्रास्ट्रक्चर सुधार के लिए चल रहे सिक्सलेन, फोरलेन समेत अन्य निर्माण कार्यों और कुछ अन्य मानकों की कटौती के कारण टॉप थ्री में नहीं आ पाए। फाइनल रिपोर्ट मिलेगी तो कुछ कारण और स्पष्ट होंगे। लेकिन हमें उम्मीद है कि साल 2025 के स्वच्छ वायु सर्वेक्षण में हम काफी बेहतर करेंगे।

अनियंत्रित होकर ट्रक पलटा, साइकिल सवार की दबकर मौत

संवाददाता—अयोध्या। रुदौली कोतवाली क्षेत्र के अंतर्गत राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित ग्राम कुढ़ासादात गांव के पास ट्रक के नीचे दबकर एक व्यक्ति की मौत हो गई। ट्रक पलटने की तेज आवाज सुनकर ग्रामीण तुरन्त राजमार्ग की तरफ दौड़ पड़े। ट्रक के नीचे दबे व्यक्ति को बाहर निकालने का प्रयास करने लगे। लेकिन ग्रामीणों को असफलता हाथ लगी। वही ग्रामीणों द्वारा इस घटना की सूचना रुदौली कोतवाली पुलिस को दी। घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस ने आनन फानन में क्रेन की मदद से शव को कड़ी मशक्कत से बाहर निकाला और शव को अपने कब्जे में लेकर पीएम के लिए भेज दिया। जबकि ट्रक चालक घटना के बाद मौके से फरार हो गया। पुलिस ने ट्रक को अपने कब्जे में ले लिया। जानकारी के अनुसार रुदौली कोतवाली की भेलसर पुलिस चौकी क्षेत्र के राष्ट्रीय राजमार्ग पर ग्राम कूढ़ासादात गांव के पास सोमवार की सुबह भोर में समय साढ़े 4 बजे ग्राम कूढ़ासादात गांव निवासी विनोद कुमार पुत्र स्व तुलसीराम उम्र 30 वर्ष जो अपने घर से साइकिल से सवार होकर किसी काम से रौजागांव की तरफ जा रहे थे। तभी लखनऊ की तरफ से मुर्गी का दाना लोडकर आ रहे ट्रक आरजे 28 जीए 3261 अचानक अनियंत्रित होकर पलट गया। जिसके नीचे विनोद कुमार दब गया। विनोद कुमार के दबने की सूचना गांव में पहुंचते ही परिजन सहित भारी संख्या में गांव के ग्रामीण मौके पर इकट्ठा हो गए। और तुरन्त ट्रक पर लदे मुर्गी के दाने के बोरे को बाहर निकालने लगे। लेकिन ट्रक खाली हो जाने के बावजूद भी ग्रामीण बेबस थे। उनके पास कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। बस उनकी जुबान से जोर जोर से बचाव बचाव करने की गुहार लगा रहे थे।

ग्रामीणों की सूचना पर पहुचे भेलसर चौकी प्रभारी मनीष चतुर्वेदी अपने हमराहियों कांस्टेबल गोविंद यादव व रजत कुमार के साथ घटनास्थल पर पहुंचकर ट्रक के नीचे दबे व्यक्ति को क्रेन की मदद से ट्रक को हटवाकर बाहर निकलवाया। लेकिन देर हो चुकी थी। तब तक उसकी मौत हो गई। इस सम्बन्ध में भेलसर चौकी प्रभारी मनीष चतुर्वेदी ने बताया कि लखनऊ की ओर से मुर्गी का दाना लादकर जा रहा ट्रक अनियंत्रित होकर ग्राम कूढ़ासादात गांव के पास पलट गया। जिसके नीचे दबकर ग्राम कूढ़ासादात निवासी विनोद कुमार पुत्र स्व. तुलसीराम उम्र 30 वर्ष की मौत हो गई है। मृतक के शव का पंचायत नामा भरकर पीएम के लिए भेज दिया गया है। ट्रक पलटने के बाद चालक मौके से फरार हो गया। उन्होंने बताया कि मृतक के परिजन की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। और आगे की कार्रवाई की जा रही है।

अदालती नोटिस

सम्मन बरगज इनफिसाल मुकदमा (आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाप्ता 200 ई0)

वाद सं0—

धारा— 116 उ0प्र0रा0संहिता 2006

अदालत— श्रीमान उपजिलाधिकारी महोदय हर्रैया जिला—बस्ती

रामचन्दर

बनाम

वंशू आदि

वंशू व रामसकल पुत्रगण दयाराम साकिन नटवाजेत तप्पा ऊँजी परगना नगर पश्चिम तहसील हर्रैया जिला—बस्ती

तारीख पेशी 13—09—2024

वाजेह हो कि ने आपके नाम एक नालिस बाबत दायर की है। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख 13 माह 09 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे दिन बमुकाम असलतन या मारफत वकील के जो मुकदमे के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सरुश हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके हाजिरी के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजवीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तदलात करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया। द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब

(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)

वाद सं0—402/2024

अदालत—श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) महोदय जिला—बस्ती

मो0 इकवाल

बनाम

पद्मावती सिंह आदि

1. श्रीमती पद्मावती सिंह पत्नी स्व0 जगदीश बहादुर सिंह साकिन मौजा डारीडीहा तप्पा देवरांव परगना बस्ती पूरब तहसील व जिला—बस्ती हाल मुकाम साकिन कटरूआबीर सिंह तप्पा पिपरा परगना नगर पूरब तहसील व जिला—बस्ती

2. अरूण कुमार सिंह पुत्र स्व0 जगदीश बहादुर सिंह साकिन मौजा डारीडीहा पो0 मिश्रौलिया तप्पा देवरांव परगना बस्ती पूरब तहसील व जिला—बस्ती हाल मुकाम साकिन कटरूआबीर सिंह तप्पा पिपरा परगना नगर पूरब तहसील व जिला—बस्ती

तारीख पेशी 18—10—2024

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 18 माह 10 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असलतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सरुश हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजवीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तदलात करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

संविधान मान स्तंभ स्थापना दिवस आज

संवाददाता—सिद्धार्थनगर। सपा कार्यालय पर मंगलवार को संविधान मान स्तंभ दिवस मनाया जाएगा। कार्यक्रम में समाजवादी आंबेडकर वाहिनी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मिठाई लाल भारती शामिल होंगे। यह जानकारी पार्टी प्रवक्ता अब्दुल कलाम सिद्दीकी ने दी। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम दिन में 11 बजे से होगा। इसकी अध्यक्षता जिलाध्यक्ष लालजी यादव करेंगे।

उस्का बाजार क्षेत्र में गणेश महोत्सव की धूम

संवाददाता—सिद्धार्थनगर। उस्का बाजार क्षेत्र में शनिवार से गणेश चतुर्थी धूमधाम से मनाई जा रही है। 10 दिनों तक चलने वाले गणेश महोत्सव का आरंभ हो गया है। समापन अनंत चतुर्थी के दिन 17 सितंबर को होगा। गणेश चतुर्थी को गणपति बप्पा का जन्मोत्सव मनाया जाता है। श्रद्धालु घर और पूजा पंडाल में गणेश जी की मूर्ति स्थापित किए हैं। उनके आगमन को लेकर भक्तों के बीच हर्षोल्लास का माहौल है। पंडालों में गणपति बप्पा का स्वागत ढोल—नगाड़ों और भजन—कीर्तन के साथ हो रहा है। कस्बा के आबेडकर नगर, आद्या प्रसाद नगर, सुभाष नगर आदि वार्डों में श्रद्धालु श्रीगणेश प्रतिमा स्थापित करके विधिवत पूजा पाठ करके गणेश महोत्सव मना रहे हैं।

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब

(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)

प्रतिकर वाद सं0—92/2021

अदालत—श्रीमान समक्ष मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण महोदय जिला—बस्ती

अंजली गुप्ता

बनाम

श्याम सुन्दर शुक्ला

1. श्याम सुन्दर शुक्ला पुत्र श्री देवनाथ शुक्ला ग्राम बिहरा पोस्ट बिहरा तहसील व थाना बांसी जिला सिद्धार्थनगर पिन कोड नं0—272153 (वाहन स्वामी मोटर साईकिल नम्बर यू0पी0 55 एल/6522)

तारीख पेशी 11—09—2024

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 11 माह 09 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असलतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सरुश हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजवीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तदलात करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब

(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)

प्रतिकर वाद सं0—91/2021

अदालत—श्रीमान समक्ष मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण महोदय जिला—बस्ती

अल्का गुप्ता

बनाम

श्याम सुन्दर शुक्ला

1. श्याम सुन्दर शुक्ला पुत्र श्री देवनाथ शुक्ला ग्राम बिहरा पोस्ट बिहरा तहसील व थाना बांसी जिला सिद्धार्थनगर पिन कोड नं0—272153 (वाहन स्वामी मोटर साईकिल नम्बर यू0पी0 55 एल/6522)

तारीख पेशी 11—09—2024

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 11 माह 09 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असलतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सरुश हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजवीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तदलात करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

न्यायालय सिविल जज (सी0डि0) सिद्धार्थनगर स्थान द्वारा निकाली गयी उद्घोषणा

प्रकीर्ण उत्तराधिकार वाद संख्या—68/2024

1. साहिल अहमद उम्र 29 वर्ष 2. असर अहमद उम्र 24 वर्ष 3. नवाज अहमद उम्र 27 वर्ष पुत्रगण सुहेल अहमद मृ0 लोहियानगर (परती बाजार) नगर पंचायत व पोस्ट उसका बाजार तप्पा नगवा परगना व तहसील नौगढ़ जनपद सिद्धार्थनगर

प्रार्थी/प्रार्थीगण

बनाम

इस्टेट

प्रा0 पत्र अन्तर्गत दफा 372 भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम

तारीख पेशी 04—10—2024

अपने मृतक को देय ऋण और प्रतिभूतियों को वसूल करने के लिये प्रमाण पत्र की अभिप्राप्ति के लिये सन 1886 ई0 के अधिनियम 7 के अधीन उत्तराधिकार का आवेदन के लिये।

चूंकि ने प्रमाण पत्र को अभिप्राप्ति के लिये आवेदन दिया है और सन 2024 के 10 के 04 दिवस आवेदन को सुनवाई के लिये नियत हुआ है। अतः यह उदघोषणा निकाली जाती है कि जिस किसी को उक्त आवेदन के सम्बन्ध में आपत्ति हो वह स्वयं या अभिवक्ता द्वारा ..10 बजे पूर्वान्ह न्यायालय सिविल जज (सी0डि0) सिद्धार्थनगर में नियत दिनांक पर उप संजात होकर अपनी आपत्ति पेश करें। उक्त दिनांक के अवसान पर फिर किसी की आपत्ति न सुनी जायेगी और आवेदन के सम्बन्ध में यथोचित आदेश पारित होगा।

2024 के 09 के 09 दिवस को दिनांकित।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब

(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)

प्रतिकर वाद सं0—91/2021

अदालत—श्रीमान समक्ष मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण महोदय जिला—बस्ती

अल्का गुप्ता

बनाम

श्याम सुन्दर शुक्ला

1. श्याम सुन्दर शुक्ला पुत्र श्री देवनाथ शुक्ला ग्राम बिहरा पोस्ट बिहरा तहसील व थाना बांसी जिला सिद्धार्थनगर पिन कोड नं0—272153 (वाहन स्वामी मोटर साईकिल नम्बर यू0पी0 55 एल/6522)

तारीख पेशी 11—09—2024

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 11 माह 09 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असलतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सरुश हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजवीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तदलात करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

कुपोषण से बचने के लिए पौष्टिक आहार जरूरी —शेफाली

संवाददाता—अम्बेडकरनगर। रमाबाई में हुई पोषण माह पर जागरूकता गोष्ठी अम्बेडकरनगर, संवाददाता। रमाबाई राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय अकबरपुर में राष्ट्रीय पोषण माह के तहत सोमवार को प्राचार्य प्रोफेसर शेफाली सिंह के नेतृत्व में जागरूकता कार्यक्रम हुआ। साथ ही गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसका विषय समग्र पोषण रहा। कार्यक्रम में छात्राओं ने उत्सापूर्वक प्रतिभाग किया। गृह विज्ञान विभाग प्रभारी संगीता ने संतुलित आहार के बारे में जानकारी दी। डॉ अस्तुति ने एनीमिया तथा पोषण के बारे में विस्तार से बताया। साथ ही सभी प्रकार के पौष्टिक एवं मौसमी खाद्य पदार्थों को अपने दैनिक आहार में सम्मिलित करने के लिए प्रेरित किया। वी प्रिया ने पौष्टिक आहार के बारे में जानकारी दी। महाविद्यालय के मुख्य शास्ता प्रो. अरविंद वर्मा, प्रो. सुधा, प्रो. अरुण कांत गौतम, डॉ नंदन सिंह, डॉ मनोज गुप्त, डॉ. सुनीता सिंह, डॉ सतीश उपाध्याय, डॉ अतुल कनौजिया, डॉ रवीन्द्र वर्मा उपस्थित रहे।

अभद्रता का आरोप लगा इलेक्ट्रिक बस चालकों ने सेवा की ठप

संवाददाता—अयोध्या। नगर में चलने वाली इलेक्ट्रिक बसों की सेवा को कुछ घंटे के लिए चालकों ने बंद कर दिया। आरोप था कि एक पुलिसकर्मी ने संचालक से अभद्र व्यवहार किया। रोडवेज के क्षेत्रीय प्रबंधक और क्षेत्राधिकारी के समझाने के बाद सेवा बहाल हुई जानकारी के मुताबिक नया घाट क्षेत्र स्थित लता मंगेशकर चौराहे के पास पुलिस कर्मी और इलेक्ट्रिक बस के चालक से गलत तरीके से बस चलाने को लेकर बहसबाजी हो गई। संचालक ने पुलिस कर्मी पर अभद्रता करने का आरोप लगाया। जानकारी मिलते ही सभी संचालकों ने अपनी बसों को नया घाट स्थित एक स्थान पर खड़ा कर दिया। इसके बाद श्रद्धालुओं सहित स्थानीय नागरिकों को कई घंटे आवागमन में परेशानियों का सामना करना पड़ा।

दैनिक भारतीय बस्ती

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1—4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक दिनेश चन्द्र पाण्डेय

प्रबन्ध सम्पादक—दिनेश सिंह

संयुक्त सम्पादक—प्रदीप चन्द्र पाण्डेय

अयोध्या—फैजाबाद कार्यालय—

चर्तुभुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट

अयोध्या—फैजाबाद

लखनऊ कार्यालय—

आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।

गोरखपुर कार्यालय—

इलाहीबाग गोरखपुर।

मो09450567450 9336715406,

ई.मेलbhartiyabasti@yahoo.com

bhartiyabasti@gmail.com